शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

हिन्दी विषय की उपचारात्मक(रिमीडियल) शिक्षण पर आधारित

शिक्षक संदर्शिका

कक्षा 7

सत्र 2023—2024

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षक–संदर्शिका (हिन्दी)

(उपचारात्मक शिक्षण हेतु)

कक्षा–7

(वर्ष 2023–24)

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी
(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

मुख्य संरक्षक : **श्री दीपक कुमार,** प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

संरक्षक : **श्री विजय किरन आनन्द**, महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : **डॉ० अंजना गोयल,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

परामर्श : **डॉ० पवन कुमार,** संयुक्त निदेशक(एस.एस.ए.), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ, **श्रीमती दीपा तिवारी,** उप शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

समन्वयन : **डॉ० ऋचा जोशी**, निदेशक राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

समीक्षा : **डॉ० रामसुधार सिंह** (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यू०पी० कालेज, वाराणसी), **प्रो० सत्यपाल शर्मा** (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **डॉ० उदय प्रकाश** (एसो०प्रो०, श्री बलदेव पी०जी० कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी), **डॉ० सुनीता सिंह** (एसो०प्रो०, शिक्षा संकाय बी०एच०यू०), **डॉ० सत्य प्रकाश पाल** (असि०प्रो० हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **श्री अमरजीत,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

संपादन : **डॉ० प्रदीप जायसवाल**, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी, **श्री देवेन्द्र कुमार दूबे**, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

सहयोग : **डॉ० महेन्द्र द्विवेदी** (सलाहकार, यूनीसेफ, लखनऊ), **डॉ० शुभ्रांशु उपाध्याय** (सलाहकार, यूनीसेफ लखनऊ)।

लेखक मंडल : **डॉ० शीला सिंह**, (प्र०अ०, रा०हा० बढ़ैनी कलाँ वाराणसी), **डॉ० सुषमा गुप्ता** (प्र०अ०, रा०हा० सिरसा, प्रयागराज), **डॉ० अनामिका** (प्रवक्ता, डायट, गाजीपुर), **श्री दिनेश यादव** (प्रवक्ता, डायट, सोनभद्र), **डॉ० वन्दना सिंह** (प्रवक्ता, डायट, कौशाम्बी), **डॉ० अर्पणा श्रीवास्तव**, (प्रवक्ता, रा०बा०इ०का० मलदहिया, वाराणसी), **डॉ० चंचल** (प्रवक्ता, बा०इ०का० कोपागंज, मऊ), **डॉ० रविशंकर तिवारी** (प्रवक्ता, व०से०सं०इ०का० महेवा कला, प्रयागराज), **श्री सत्यजीत कुमार द्विवेदी** (प्र०अ०, उ०प्रा०वि०, प्रधान टोला, कुशीनगर), **श्री अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता** (एस०आर०जी०, वाराणसी), **श्री रंजन कुमार पाठक** (ए०आर०पी० बड़ागाँव, वाराणसी), **श्रीमती अनीता शुक्ला** (स०अ०, क०वि० रुस्तमपुर, वाराणसी), **श्रीमती शालिनी सिंह** (स०अ०, उ०प्र०वि० मंगारी, वाराणसी), **श्री दुर्गेश नन्दन त्रिपाठी** (स०अ०, क०वि० कोइलीपुरवा, लखीमपुर खीरी), **श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी** (स०अ०, उ०प्रा०वि० धरतीडोलवा, सोनभद्र), **श्री मिथिलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पचेवरा, मीरजापुर), **श्री शैलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० कैनाल बस्ती, मीरजापुर), **श्रीमती माया सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० रसूलपुर रिठौरी, बुलंदशहर), **डॉ० नमिता सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० चिरईगाँव, वाराणसी), **डॉ० प्रतिभा मिश्रा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० पाली, भदोही), **श्रीमती अर्चना सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पतेरवाँ, वाराणसी), **श्रीमती नीलम सिंह** (स०अ०, उ०प्रा०वि० वारीगाँव, भदोही), **सुश्री अनुराधा कुमारी** (स०अ०, प्रा०वि० गोगहरा, चंदौली), **श्रीमती रेखा वर्मा** (स०अ०, प्रा०वि० सेहमलपुर, वाराणसी), **डॉ० अखिलेश कुमार पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० होलापुर, वाराणसी), **श्री अनुज प्रताप पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० हाजीपट्टी, मऊ), **डॉ० नितिकेश यादव** (स०अ०, क०वि० चकवाँ, जौनपुर), **श्री भानु प्रकाशधर द्विवेदी** (स०अ०, क०वि० बढ़ैनी कला, वाराणसी), **शशि भूषण त्रिपाठी** (स०अ०, क०वि० दनियालपुर, वाराणसी), **डॉ० माधव सिंह** (उ०प्रा०वि० पश्चिम पट्टी, आजमगढ़)।

तकनीकी सहयोग एवं रूपायन : **श्री विकास शर्मा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० नगला सूरजभान कम्पोजिट, आगरा), **श्री वैभवकान्त श्रीवास्तव** (स०अ०, क०वि० सुल्तानपुर, आजमगढ़), **श्री अनुपम चौधरी** (स०अ०, प्रा०वि० नौरंगाबाद, बदायूँ), **श्री अजीत कुमार कौशल** (क०स०रा०हि०सं०, उ०प्र०, वाराणसी)।

आवरण : **श्री रविकान्त श्रीवास्तव** (स०अ०–कला, रा०इ०कॉ०, प्रयागराज)।

आभार : **शिक्षक संदर्शिका के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्य–सामग्री, विभिन्न स्रोतों से लिए गए चित्रों आदि का उपयोग किया गया है। हम उनके प्रति आभारी हैं।**

निदेशक की कलम से

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अवसर देते हुए वैश्विक स्तर पर स्थापित करना है। शिक्षा का सार्वभौमीकरण करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास करना एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा बेहतर राष्ट्र की संकल्पना में अहम पक्ष है। समय के सापेक्ष प्रगति गुणवतापूर्ण शिक्षा पर ही निर्भर है। अतः यह हम सभी का दायित्व है कि त्रुटियों का आकलन कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाए। इस दृष्टि से भाषा की बेहतर समझ तथा प्रयोग अनिवार्य है। बच्चों की भाषायी दक्षताओं का विकास उन्हें अन्य विषयों को भी समझने में सहायता देता है। कल्पना, अनुमान, तर्क, विचारों की स्पष्टता इस दिशा में बच्चों को सक्षम बनाती हैं।

विद्यालयी शिक्षा में बच्चों की रुचि भाषायी दक्षताओं में सहज ही होती है। वे सुनने बोलने, पढ़ने और लिखने की दक्षताओं में पारंगत होते हैं तथा उनकी समझ और भी बेहतर होती है। साथ ही व्याकरण और रचनात्मक कौशल उन्हें समस्या समाधान, तर्क, चिन्तन और विचार प्रकट करने में सहायक होती हैं।

बच्चों को केन्द्र में रखकर उनके अधिगम, आकलन और संप्राप्ति पर कार्य किया जाना अत्यन्त सुखद है। शिक्षकों के लिए 50 कार्यदिवसों की शिक्षण योजना बच्चों के उपचारात्मक (रिमीडियल) कक्षा शिक्षण की दिशा में नवीन और सार्थक कदम है। इन योजनाओं पर आधारित कार्यपत्रक बनाए गए हैं, जिनकी संख्या प्रतियोजना 2 से 5 कार्यपत्रक हैं जिन्हें कार्यपुस्तिका के रूप निबद्ध किया गया है। कार्यपुस्तिका बच्चों के लिए है जो दो भागों में है– पहले भाग में उपचारात्मक शिक्षण पर आधारित कार्यपत्रक और दूसरे भाग में पाठ आधारित कार्यपत्रक हैं। प्रश्नों की प्रकृति सरल है और बच्चों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर बनाई गई है। कार्यपत्रकों में रंगीन एवं आकर्षक चित्र बने हुए हैं जो सहज रूप से बच्चों के लिए प्रश्नों को हल करने में आनन्ददायक वातावरण बनाने में सक्षम है।

इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका के विकास से जुड़े विभिन्न जनपदों के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रवक्ताओं, बाह्य विशेषज्ञों एवं शिक्षकों की सराहना करती हूँ, जिन्होंने अपने सतत् एवं अथक परिश्रम से इस संदर्शिका के विकास में सहयोग प्रदान किया है। साथ ही इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका के निर्देशन, समन्वय एवं सम्पादन हेतु राज्य हिन्दी संस्थान उ०प्र०, वाराणसी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका में विभिन्न स्त्रोतों से सामग्री ली गयी है, उन सभी के प्रति भी मैं अभार व्यक्त करती हूँ। इस संदर्शिका एवं कार्यपुस्तिका को और अधिक उपयोगी बनाने के संबंध में आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

(डा० अंजना गोयल)
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
उ०प्र०, लखनऊ

भूमिका

वर्तमान परिदृश्य की चुनौतियों के सापेक्ष राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव किए गए हैं। परिस्थितिजन्य कारणों से बच्चों में आए लर्निंग गैप (अधिगम अंतराल) को कम करके अपेक्षित दक्षताओं को प्राप्त करने हेतु अवसर प्रदान करने के साथ ही कक्षा अनुरूप निर्धारित अधिगम संप्राप्ति सुनिश्चित कराना एक बड़ी चुनौती है।

इस क्रम में शिक्षकों और बच्चों के लिए शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना आवश्यक है। इससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सकारात्मक वातावरण सृजन किए जाने में सहायता मिलती है। बच्चे विद्यालय की सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं में आत्मविश्वास के साथ भाग लेंगे तथा कक्षावार निर्धारित अधिगम संप्राप्ति को सरलतापूर्वक प्राप्त कर लेंगे।

इस परिप्रेक्ष्य में उच्च प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 6 से 8) के शिक्षकों के लिए शिक्षक संदर्शिकाओं एवं बच्चों के लिए कार्यपुस्तिकाओं का विकास किया गया है।

बच्चों को केन्द्र में रखकर तैयार की गई शिक्षक संदर्शिकाएँ शिक्षकों को हिन्दी भाषा की नई शिक्षण विधियों और गतिविधियों आदि से परिचित कराएँगी। कार्यपुस्तिकाओं को दो भागों में बाँटा गया है– पहले भाग में बच्चों के उपचारात्मक शिक्षण हेतु 50 दिवसीय शिक्षण योजना आधारित कार्यपत्रक हैं तथा दूसरे भाग में पाठ आधारित कार्यपत्रक हैं। ये कार्यपुस्तिकाएँ अभिभावकों की सहभागिता भी सुनिश्चित करेंगी साथ ही वे बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर शिक्षकों से संवाद भी कर सकेंगे।

शिक्षकों के लिए

आप सभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से परिचित हैं। नई शिक्षा व्यवस्था में कई महत्त्वपूर्ण बदलाव हो रहे हैं। कोविड के कारण बच्चों में आये लर्निंग गैप को न्यूनतम करने के प्रयास किये जा रहे हैं। इसी क्रम में शिक्षकों के लिए नई–नई शिक्षण सामग्रियों का निर्माण किया जा रहा है, जिससे कक्षा अनुरूप बच्चों के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करने में सहायता मिल सके। आप से अपेक्षा है कि सन्दर्शिका की मदद से शिक्षण के दौरान विषयवस्तु के अनुसार ऑडियो/वीडियो/अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन एवं उपयोग उपलब्धता के अनुसार कर लें। इस आशय के साथ यह संदर्शिका आपके भाषा शिक्षण में सहयोग करने हेतु उपलब्ध करायी जा रही है। एक शिक्षक के रूप में आपसे यह अपेक्षा है कि–

- कक्षा–कक्ष में उन बच्चों की पहचान करें, जिनका न्यूनतम अधिगम स्तर कक्षा–शिक्षण के अनुरूप नहीं है, जिससे कक्षा–कक्ष में उनकी अधिकाधिक मदद हो सके।
- संदर्शिका में जो शिक्षण–योजना दी गई है, कक्षा–शिक्षण में उसी विधि का प्रयोग करें।
- यथास्थान/ यथासमय कार्यपत्रकों का प्रयोग करें।
- बच्चे जब कार्यपुस्तिका पर कार्य करें तब उनका अवलोकन अवश्य करें।
- कार्यपत्रकों की जाँच कर आवश्यक फीडबैक/प्रतिपुष्टि बच्चों को दें।
- बच्चों से बातचीत करें कि उन्हें विषयवस्तु को समझने में क्या और कहाँ परेशानी हो रही है।

50 दिवसीय उपचारात्मक शिक्षण–योजना

दिवस	सप्ताह	अपेक्षित अधिगम संप्राप्ति / दक्षताएँ	पृष्ठ संख्या
1	1	बच्चे सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।	11
2	1	बच्चे देख व सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।	13
3	1	बच्चे शब्दों का उच्चारण शुद्ध रूप से करते हैं।	16
4	1	दिए गए शब्दों को बच्चे शुद्ध रूप से उच्चारण करते हुए अंतर बताते हैं।	18
5	1	अपठित गद्यांश को पढ़कर उनके प्रश्नों के उत्तर देते हैं।	20
6	2	बच्चे चित्र को देखकर अनुच्छेद या कहानी का निर्माण करते हैं।	22
7	2	बच्चे संज्ञा के प्रकार को भली–भाँति समझ पाते हैं।	25
8	2	बच्चे चित्र पर मौखिक चर्चा करते हैं।	27
9	2	बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं और समझ के साथ उत्तर देते हैं।	30
10	2	बच्चे संयुक्त व्यंजन एवं संयुक्ताक्षर वाले शब्दों / वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ते हैं।	32
11	3	बच्चे धाराप्रवाह पढ़ते और समझ कर उत्तर देते हैं।	35
12	3	बच्चे अधूरी कहानी को पूरा करते हैं तथा पात्रों के आधार पर कहानी का निर्माण करते हैं।	37
13	3	बच्चे कविता को पूरा करते हैं।	39
14	3	बच्चे सर्वनाम के भेद को पहचान कर उसके प्रकार को बताते हैं।	41

15	3	बच्चे विशेषण के भेदों को जानते हैं और बोल–चाल में उनका प्रयोग करते हैं।	44
16	4	बच्चे कहानी के माध्यम से छोटे–छोटे संवादों को बोलते हैं।	47
17	4	बच्चे दिए गए वाक्यों की सहायता से कविता पूरी करते हैं। कविता में आए हुए प्रमुख शब्दों के बारे में अपने विचार लिखते हैं।	49
18	4	बच्चे स्वयं छोटी कविताओं की रचना कर लेते हैं एवं उनका भावार्थ बता लेते हैं।	51
19	4	बच्चे कविता को हाव–भाव और लय के साथ प्रस्तुत करते हैं तथा कविता पर चर्चा करने के बाद दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हैं।	54
20	4	बच्चे अनुच्छेद को पढ़ते हुए उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते हैं।	57
21	5	बच्चे क्रिया की पहचान कर लेते हैं और उनका दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं ।	59
22	5	बच्चे उपसर्ग तथा प्रत्यय को समझते हैं और उनको वर्गीकृत करते हैं।	61
23	5	बच्चे अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करते हैं और लिखते हैं।	63
24	5	बच्चे दन्त्य 'स', मूर्धन्य 'ष' व तालव्य 'श' के उच्चारण–स्थान को जानते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ते हैं।	65
25	5	दिए गए विषय के आधार पर पत्र–लेखन कर लेते हैं	68

26	6	बच्चे पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर लेते हैं और इन शब्दों का दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।	70
27	6	बच्चे शब्दों के अर्थ समझते हैं और उनका विलोम शब्द लिखते हैं।	72
28	6	बच्चे धाराप्रवाह के साथ पढ़ते और समझ कर उत्तर देते हैं।	74
29	6	बच्चे कठिन शब्दों का सही उच्चारण करते हुए लेखन–कार्य करते हैं।	77
30	6	बच्चे समाचार–पत्रों में प्रकाशित सामग्री का अध्ययन कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।	80
31	7	बच्चे समाचार–पत्रों में दिए गए विज्ञापन के द्वारा विज्ञापित वस्तु की जानकारी तथा समाचार–पत्र के संपादकीय अंशों को समझते हैं।	82
32	7	बच्चे सामान्य बातचीत व लेखन में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का अर्थ बताते हैं और वाक्य–निर्माण में मुहावरों का प्रयोग कर लेते है।	84
33	7	बच्चे दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करते हैं तथा उनके अर्थ, समानार्थी शब्द एवं विलोम शब्दों को बताते हैं।	86
34	7	बच्चे दिए गए शब्दों से कहानी का निर्माण करते हैं। (बातचीत करना, तर्कपूर्ण वाक्य सोचना, नए शब्दों की पहचान, रचनातमक प्रवृत्ति का विकास।)	87
35	7	दिए गए अनुच्छेद को पढ़ने के बाद प्रश्नों का उत्तर विचारात्मक व वर्णनात्मक शैली में करते हैं।	88

36	8	बच्चे वाक्यों को समझते हैं और वाक्यांशो को एक शब्द में लिखते हैं।	90
37	8	बच्चे एक शब्द के अनेक अर्थ से परिचित हैं और इनका दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।	92
38	8	अपठित गद्यांश को पढ़कर उनके प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ हो सकते है।	94
39	8	बच्चे वाक्य–रचना में शुद्ध वर्तनी व सही व्याकरण–चिह्न का प्रयोग करते हैं।	96
40	8	बच्चे विराम चिह्नों की पहचान करते हैं, तथा इसका लेखन में प्रयोग करते हैं।	98
41	9	किसी वस्तु (मोबाइल) के लाभ, हानि, उपयोगिता के आधार पर चिंतन–मनन करके अभिव्यक्ति देते हैं।	101
42	9	बच्चे किसी पाठ्य–पुस्तक, समाचार–पत्र/पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को पढ़कर क्रियात्मक लेखन करते हैं। हस्तलिखित बाल–पत्रिका तैयार करते हैं।	104
43	9	बच्चे बोलचाल में अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों एवं वाक्यों का उच्चारण करते एवं समझते हैं।	106
44	9	बच्चे वाक्यों के भेद और उनके अंतर को समझते हैं।	108
45	9	बच्चे 'र' के विभिन्न प्रयोग के अंतर को समझते हैं।	110
46	10	बच्चे, विभिन्न कवियों एवं लेखकों की रचना–विधा के बारे में बताते हैं।	114
47	10	बच्चे अपने स्तर के अनुकूल कविता लेखन करते हैं।	116

48	**10**	बच्चे कहानी कविता को पढ़कर उसका भाव बताते हैं और शब्दों से कविता, कहानी एवं अनुच्छेद का निर्माण करते हैं।	118
49	**10**	सुनी हुई सामग्री का अपने व्यवहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं।	120
50	**10**	अनुच्छेद को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर देते हैं तथा अपने विचार लिखते हैं।	122

राज्य हिन्दी संस्थान . उ.प्र. वाराणसी - उत्तिष्ठत जाग्रत

सप्ताह– 1

दिवस–01

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

सहायक सामग्री– पाठ्यपुस्तक, कहानी की पुस्तक, विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को निर्देश देंगे कि वे जो कहानी सुनाएँगे उससे कुछ प्रश्न किए जाएँगे जिनके उत्तर बच्चों को देना है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएँगे–

मैं आप लोगों को आज, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय के बचपन की एक कहानी सुनाता हूँ। एक बार की बात है, प्रयागराज में चौक के निकट एक गली में एक बीमार कुत्ता पड़ा था। चोट लगने की वजह से उसको घाव हो गया था और कीड़े भी पड़ गए थे। वह छटपटा रहा था, चिल्ला रहा था, पर आने–जाने वाले उसके पास से निकल जाते थे।

बारह वर्षीय मदन मोहन किसी काम से उधर से गुजरे। कुत्ते की पीड़ा को देखकर वे द्रवित हो उठे और एक डॉक्टर के पास से दवा ले आए और घाव पर लगाना आरम्भ किया। दवा तीक्ष्ण थी, तो कुत्ता पीड़ित अवस्था में गुर्राने, दाँत दिखाने लगा। कई तमाशबीनों ने कहा– अरे बच्चे हट जाओ। वह तुम्हें काट लेगा, किन्तु बालक ने न केवल वह दवा लगाई, बल्कि उसे नियमित दवा लगाकर स्वस्थ कर दिया। बचपन से ही उनके हृदय में पीड़ितों के प्रति करुणा की भावना अप्रतिम थी।

शिक्षक– कुत्ते को चोट कैसे लगी होगी?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– आपको बीमार जानवर दिखाई पड़े तो आप क्या करेंगे?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– आप मदन मोहन की जगह पर होते तो क्या करते?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– यदि मदन मोहन कुत्ते को दवा न देते तो क्या होता?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक मदन मोहन मालवीय के व्यक्तित्व पर बच्चों से चर्चा करेंगे और जीवों पर दया करने के मानवीय मूल्य से परिचित करवाएँगे।

शिक्षण के बाद शिक्षक कक्षा के बच्चों को चार समूह में विभक्त करेंगे। प्रत्येक समूह को "जीवों पर दया करें" से संबंधित एक काल्पनिक स्थिति देंगे। बच्चों को चर्चा का अवसर देंगे कि अगर आप इस स्थिति में होते तो क्या करते? चर्चा के बाद प्रत्येक समूह अपने विचार कक्षा–कक्ष में रखेगा।

काल्पनिक परिस्थिति जैसे–

1– कोई पक्षी अपने घोंसले से गिर गया हो।

2– कोई जानवर अपने समूह से बिछड़ गया हो।

3– किसी जानवर को चोट लग गई हो।

4– कोई जानवर भूखा हो।

प्रदत्त कार्य– बच्चे अपने परिवेश से जुड़ी हुई कोई कहानी लिखकर लाएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–02

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे देख व सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

सहायक सामग्री– योगासन से संबंधित कुछ चित्र एवं वीडियो क्लिप।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को त्रिकोणासन, गोमुखासन से संबंधित वीडियो क्लिप दिखाएँगे। साथ ही बच्चों को निर्देश देंगे कि वीडियो क्लिप में दिखाई जा रही मुख्य बातों को अपनी नोटबुक में लिखें। वीडियो क्लिप देखने के बाद आपसे कुछ प्रश्न किए जाएँगे, जिनके उत्तर आपको बताने होंगे।

शिक्षण के मध्य

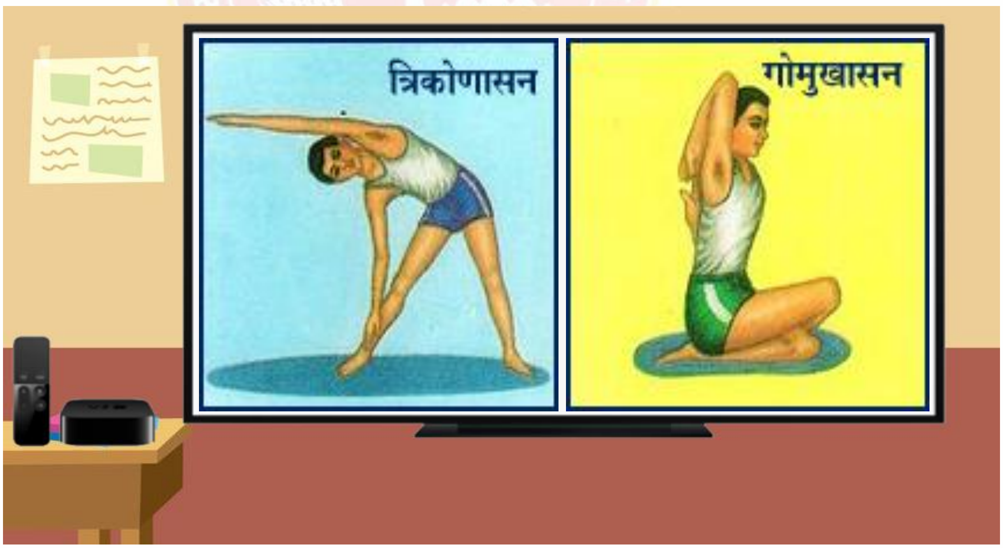

सर्वप्रथम शिक्षक त्रिकोणासन से संबंधित चित्र दिखाएँगे। चित्र देखने के बाद शिक्षक बच्चों को समझाते हैं– यह आसन खड़े होकर किया जाता है। इसको

करने से गर्दन, पीठ, कमर और पैर के स्नायु मजबूत होते हैं। शरीर का संतुलन ठीक रहता है और पाचन–तन्त्र भी ठीक रहता है।

शिक्षक– त्रिकोणासन कैसे किया जाता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– इस आसन को करने से क्या–क्या लाभ हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

गोमुखासन बैठकर किया जाता है। इसे करने से फेफड़े स्वस्थ रहते हैं और मधुमेह होने की संभावना कम हो जाती है। यह आसन पैर की ऐंठन कम करता है और पैर की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है। थकान, तनाव और चिंता को कम करता है।

शिक्षक– गोमुखासन कैसे किया जाता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– इस आसन को करने से क्या–क्या लाभ हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

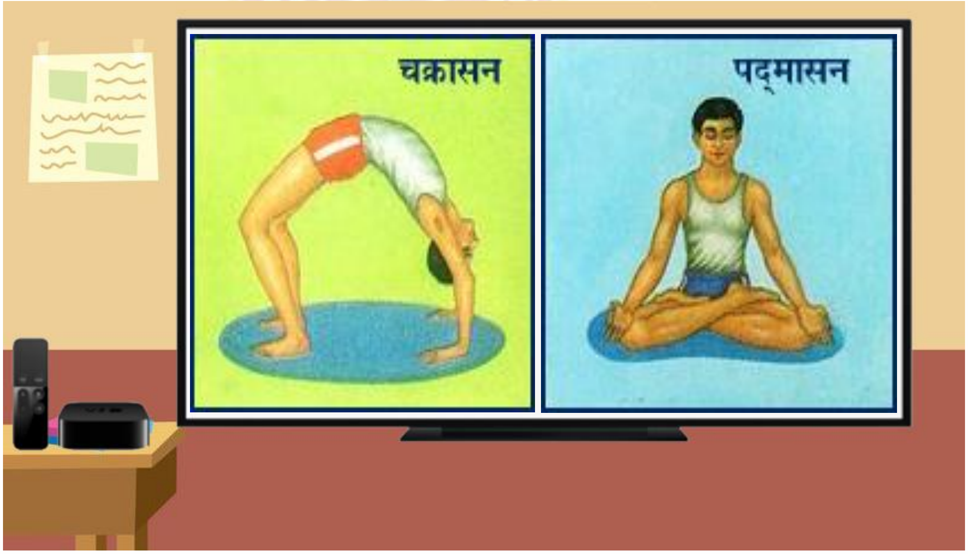

चक्रासन लेटकर किया जाता है। इसके अभ्यास से तनाव और अवसाद दूर होता है, आँखों की रोशनी बढ़ने के साथ ही हड्डियाँ भी मजबूत होती हैं।

शिक्षक– यह आसन किस प्रकार किया जाता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– इस आसन को करने से क्या लाभ है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के अंत में

तीनों योगासन दिखाने और उन पर अलग–अलग चर्चा के बाद शिक्षक योग के महत्त्व पर बच्चों से चर्चा करेंगे। बच्चों से भी निम्नलिखित विषय पर उनके विचार लेंगे–

1– आप में से कितने लोग योग करते हैं?

2– आप कौन–कौन से योगासन करते हैं?

3– योग करने के लिए कौन–सा समय अच्छा होता है और क्यों?

बच्चों की प्रतिक्रिया लेने के बाद शिक्षक विषय का समेकन करेंगे। समेकन में शिक्षक योग से होने वाले लाभों पर चर्चा करेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चे गोमुखासन का घर से अभ्यास करके आएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–03

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे शब्दों का उच्चारण शुद्ध रूप से करते हैं।

सहायक सामग्री– चार्ट पर बने हुए चित्र, शब्द कार्ड, विषय संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा में बच्चों के दो समूह बनाएँगे और उनको अलग–अलग बैठाएँगे। एक समूह को कुछ चित्र जैसे– डॉक्टर का चित्र, डाकिए का चित्र, खेलते हुए बच्चों का चित्र आदि देंगे तथा उसे समूह दो के बच्चों को दिखाने को कहेंगे। समूह दो को संबंधित चित्र का नाम लिखकर दिखाने को कहेंगे। सही शब्द दिखाने पर बच्चों को सकारात्मक प्रतिक्रिया देंगे और शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक द्वारा कविता का गायन कराया जाएगा–

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार कर लेना यह समर्पण।
मान अर्पित प्राण अर्पित
रक्त का कण–कण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

शिक्षक कविता में आए कठिन शब्दों को छाँटकर श्यामपट्ट पर लिखेंगे और बच्चों से पढ़ने को कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

कठिन शब्दों के उच्चारण में यदि बच्चों को कठिनाई हो रही हो तो उन शब्दों का स्वयं उच्चारण करके बच्चों को अभ्यास करवाएँगे तथा श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों को पुनः पढ़ने के लिए कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– सभी बच्चे अपने परिवेश से संबंधित किसी भी विषय/व्यक्ति/वस्तु पर एक कविता लिखकर लाएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–04

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दिए गए शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए उनका अंतर बताते हैं।

सहायक सामग्री– समान ध्वनि वाले कुछ शब्द–कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को समान ध्वनि वाले शब्दों के कुछ कार्ड देंगे और उनसे पढ़वाकर सुनेंगे और स्वयं भी उन शब्दों का शुद्ध उच्चारण बच्चों को सुनाएँगे, जैसे–

शाम	श्याम
बौना	बोना
दिया	दीया
वास	बास

बच्चों से पुनः इन शब्दों का उच्चारण करने को कहेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को दिए गये शब्दों के उच्चारण के पश्चात् उनके अर्थों पर चर्चा करेंगे।

प्रत्येक मिलते–जुलते शब्दों का अर्थ बताएँगे और बच्चों से पुनः शब्द और उनके अर्थ की आवृत्ति कराएँगे। जिन बच्चों को उच्चारण संबंधी समस्या आ रही हो उन पर विशेष ध्यान देंगे। इसके पश्चात् बच्चों से कार्यपत्रकों पर कार्य करवाएँगे। शिक्षण के पश्चात् कार्यपत्रक पर दिये गये शब्दों के अर्थ को बताते

हुए, कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे। पुनः जिन बच्चों को समस्याएँ आ रही होंगी उनका उचित समाधान करेंगे।

शिक्षण के अंत–

शिक्षक समान–ध्वनि वाले शब्दों का दुहराव कराते हुए अन्य शब्दों को खोजने व लिखने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चों को श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखकर देंगे और उन्हें इन शब्दों का शुद्ध उच्चारण अभ्यास घर से करके आने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 1

दिवस–05

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपठित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– पाठ्यपुस्तक, कहानियों की पुस्तक, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से बातचीत करेंगे–

- घर–परिवार, आदतें, पसंद–नापसंद पर।
- इसके साथ ही कुछ पत्र–पत्रिकाओं से संबंधित बात करेंगे।
- कुछ पुस्तकें बच्चों को पढ़ने के लिए दी जाएँगी जो उन्होंने पहले भी पढ़ी हो।
- बच्चे इन पुस्तकों को पहले से पढ़ चुके हैं, जिससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना उनके लिए आसान होगा।
- अब शिक्षक छात्रों से पूछेंगे कि अपठित गद्यांश किसे कहते हैं?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक अपठित गद्यांश के विषय में छात्रों को बताएँ कि जो गद्यांश पहले न पढ़ा गया हो, अर्थात आपकी पाठ्य–पुस्तक से न लिया गया हो, उसे अपठित गद्यांश कहा जाता है। अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर बच्चों को अपनी समझ के आधार पर देने होते हैं। शिक्षक अपठित गद्यांश की मुख्य बातें बच्चों को बताएँगे तथा उसका एक शीर्षक भी लिखवाएँगे।

इति और निहित अच्छे दोस्त थे, वे दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते और एक–दूसरे की मदद किया करते थे। एक दिन वे पार्क में घूमने गए, वहाँ पर बहुत–से झूले

लगे हुए थे। इति को झूला झूलना बहुत पसंद था, वह झूले पर बैठ गई और झूला झूलने लगी। निहित भी उसके साथ झूला झूलने लगा। दोनों बहुत खुश थे। पार्क से घर लौटने पर निहित ने देखा कि उसकी माँ की तबीयत अचानक खराब हो गई है। अपनी माँ की तबीयत खराब देखकर निहित परेशान हो गया, तब इति ने उसे समझाया कि घबराओ मत, माँ जल्दी ठीक हो जाएगी। वे दोनों माँ को तुरंत डॉक्टर के पास ले गए। दवा खाने के बाद माँ की तबीयत ठीक हो गई। माँ को ठीक देखकर वे दोनों बहुत खुश हो गए।

शिक्षक संबंधित गद्यांश से निम्ननिखित प्रश्न बच्चों से पूछेंगे–

- इति को क्या पसंद था?
- निहित क्यों परेशान था?
- अचानक किसकी तबीयत खराब हो गई थी?

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रकों पर कार्य करवाएँगे और उन्हें आपस में एक दूसरे से चर्चा करने का अवसर भी देंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक अपठित गद्यांश से संबंधित मूल बातों को पुनः बताएँगे। कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे।

शिक्षक बच्चों से पुनः कुछ प्रश्न पूछेंगे–

- अपठित गद्यांश से आप क्या समझते हैं?
- अपठित गद्यांश का उत्तर देते समय आप किन–किन बातों का ध्यान रखेंगे?

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से दिए गए प्रश्नों के उत्तर घर से लिखकर लाने को कहेंगे।

- आपको कौन–कौन–सा खेल पसंद है?
- आप अपने घर में किन–किन कार्यों में सहयोग करते हैं?

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–06

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे चित्र को देखकर अनुच्छेद या कहानी का निर्माण करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र चार्ट, पोस्टर।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक चित्रात्मक कहानी को बच्चों से पूर्ण करवाएँगे।

कहानी

एक था। वह बहुत खेलता था वह 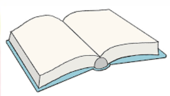 में बिल्कुल ध्यान नहीं देता था। उसकी इस आदत से बहुत परेशान थी।

ने उसे एक दिन बहुत समझाया । के समझाने के बाद वह बच्चा 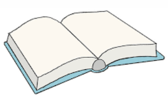 में ध्यान देने लगा।

शिक्षण के मध्य

कहानी को इस तरह पूर्ण कराने के बाद बच्चों को बताएँगे कि आज चित्र देखकर कहानी या अनुच्छेद निर्माण कौशल का अभ्यास करेंगे।

गतिविधि–

बच्चों को दिए गए चित्र को दिखाएँगे तथा कुछ शब्द देंगे और रिक्त स्थान वाली एक कहानी श्यामपट्ट पर लिख देंगे–

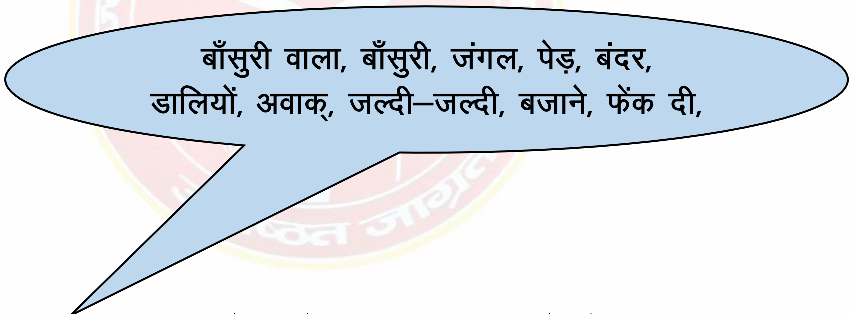

एक...................... जंगल के रास्ते............................ बेचने जा रहा था। .... का रास्ता लंबा था। चलते–चलते वह थक गया और एक घने .... के नीचे सो गया। पेड़ पर ढेर सारे............................रहते थे। बाँसुरीवाले के सो जाने के पश्चात् बंदर बाँसुरी लेकर .... पर बैठ गए। बंदरों की आवाज सुनकर .... की नींद खुल गई। वह .... रह गया कि अब वह क्या करे। अचानक उसे ध्यान आया कि उसकी कमर में एक .... है वह उसे कमर से निकाल कर .... लगा। बंदर भी उसे देखकर .... लगे। बाँसुरी वाले ने थोड़ी देर बाद बाँसुरी फेंक दी और

कुछ दूर चला गया। बंदरों ने भी बांसुरी .... और पेड़ पर और ऊपर चले गए। बाँसुरीवाला जल्दी से वापस आया और .... बाँसुरियों को उठा लिया और वहाँ से .... चला गया।

शिक्षक बच्चों को निर्देश देंगे कि आप ऊपर लिखे शब्दों की सहायता लेकर कहानी पूर्ण करिए। आप एक शब्द का प्रयोग कई बार कर सकते हैं।
तत्पश्चात शिक्षक सभी बच्चों के कार्यों का अवलोकन करते हुए, उनकी कठिनाइयों का निवारण करते जाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक गतिविधि कराने के बाद उसका निरीक्षण करेंगे और बच्चों को उनके कार्यों के आधार पर समझाएँगे। शिक्षक बच्चों को चार समूह में बाँटेंगे तथा हर समूह को चित्रयुक्त पाँच–पाँच फ्लैश कार्ड देकर छोटी–सी कहानी लिखने को कहेंगे और अच्छी कहानी लिखने वाले समूह को प्रोत्साहित करेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चे अपने आस–पास की वस्तुओं, व्यक्तियों से सम्बन्धित कोई कहानी या अनुच्छेद लिखकर ले आएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–07

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चें संज्ञा के प्रकारों को भली–भाँति समझ पाते हैं।

सहायक सामग्री– अनुच्छेद लिखा चार्ट पेपर, फ्लैश–कार्ड, कुछ प्रत्यय के शब्द–कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक संज्ञा की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए श्यामपट्ट पर एक अनुच्छेद लिखेंगे–

नेहा अपने नानाजी के साथ चिड़ियाघर देखने पानीपत से दिल्ली गई। चिड़ियाघर का द्वार मजबूत लोहे का बना था। वहाँ उसे बचपन की सहेली रीना मिली। वह भी चिड़याघर और लाल किला देखने अपने दादाजी के साथ आई थी। मिलकर दोनों की खुशी का ठिकाना न रहा। दोनों ने मिलकर केसर वाला दूध और मिठाई खाई इसके उपरान्त आगे बढ़ने पर देखा कि हिरनों का झुंड तालाब में पानी पी रहा था। अचानक एक हिरन का बच्चा तालाब में गिर गया और डूबने लगा। एक बहादुर बच्चे ने तालाब में कूदकर डूबते हुए हिरन के बच्चे को बचाया।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक अनुच्छेद में संज्ञा शब्दों को छाँटने के साथ ही उनके गुण के आधार पर अलग–अलग समूह में लिखने को कहेंगे तत्पश्चात् संज्ञा के भेद को स्पष्ट करेंगे।

जातिवाचक संज्ञा– द्वार, मिठाई।

व्यक्तिवाचक संज्ञा– नेहा, पानीपत, दिल्ली, रीना, लाल किला।

भाववाचक संज्ञा– बचपन, खुशी।

समूहवाचक संज्ञा– झुंड।

द्रव्यवाचक संज्ञा– दूध, लोहा, पानी।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को पाँच समूह में बाँटकर इन्हे संज्ञा के प्रकारों के नाम देंगे। अब प्रत्येक समूह को कुछ शब्दों की सूची देंगे और इसमें से अपने नाम के अनुसार संज्ञा शब्द छाँटने के लिए कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को व्यक्ति, वस्तु, स्थान एवं प्राणी के पाँच–पाँच चित्र अपनी अभ्यास–पुस्तिका में चिपकाकर लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के चार कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–08

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे चित्र पर मौखिक चर्चा करते हैं।

सहायक सामग्री– रेलवे स्टेशन का चित्र, विषय संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

यातायात के साधनों की कितनी समझ बच्चों में है, यह जानने के लिए शिक्षक कुछ प्रश्न बच्चों से करेंगे, जैसे–

शिक्षक– आप गर्मियों की छुट्टी में कहाँ गए थे?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– आप ने किस साधन से यात्रा की?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– आपको ट्रेन में बैठना पसंद है या बस में?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– आपको बस/ट्रेन क्यों पसन्द हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को रेलवे स्टेशन का चित्र दिखाएँगे। चित्र दिखाकर बच्चों से प्रश्न पूछेंगे, जैसे–

शिक्षक– चित्र में आपको क्या–क्या दिखाई दे रहा है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– चित्र में दिखाई दे रहा दृश्य किस स्थान का हो सकता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– क्या आपने रेल से यात्रा की है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– रेल यात्रा का अपना कोई अनुभव बताइए।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक रेल–यात्रा से संबंधित आवश्यक नियम जैसे– रेल में यात्रा से पूर्व टिकट लेना, रेल के दरवाजे पर खड़ा न होना, खिड़की पर या खिड़की से बाहर हाथ न निकालना, रेल में गंदगी न करना, कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में डालना, ट्रेन रुकी होने पर ही उस पर चढ़ना या उतरना, किसी अजनबी द्वारा दिया गया खाद्य पदार्थ न लेना आदि बच्चों को बताएँगे।

गतिविधि–

शिक्षक द्वारा कक्षा को पाँच समूहों में विभाजित कर दिया जाएगा तथा प्रत्येक समूह को एक–एक विषय दिया जाएगा, जैसे–

समूह 1– रेल–यात्रा करते समय वृद्ध या दिव्यांग व्यक्ति की सहायता कैसे करेंगे?

समूह 2– ट्रेन में स्वच्छता बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए?

समूह 3– रेल–यात्रा से पूर्व क्या–क्या तैयारी करनी चाहिए?

समूह 4– यदि रेल न होती तो क्या होता?

समूह 5– ट्रेन पर लिखा है "रेल राष्ट्रीय सम्पत्ति है, इसकी रक्षा करें।" रेल की रक्षा किस प्रकार करेंगे?

समूह द्वारा दिए गए विचारों पर शिक्षक चर्चा भी करते रहेंगे और उपयुक्त नियमों से बच्चों को परिचित कराते रहेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चे अपने परिवार के सदस्यों से किसी रेल–यात्रा के अनुभव पूछकर आएँगे और उसे कक्षा–कक्ष में बताएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–09

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे ध्यानपूर्वक सुनते हैं और समझ के साथ उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र चार्ट, कविता चार्ट, कविताओं की पुस्तक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से उनके घर–परिवार तथा उनकी रुचियों से संबंधित कुछ बातचीत करेंगे और बच्चों के सहज होने पर अगले चरण में कार्य करेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक निबंध का वाचन करेंगे–

"लोकगीत सीधे जनसामान्य के गीत हैं। लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्यप्रदेश, दक्षिण छोटा नागपुर में गोंड– खांड, ओरांव–मुंडा, भील–संथाल आदि फैले हुए हैं, जिनमें आज भी जीवन, नियमों की जकड़ में बँध न सका और वह निर्द्वन्द्व लहराता है। इनके गीत और नृत्य अधिकतर साथ–साथ और बड़े–बड़े दलों में गाए और नाचे जाते हैं। आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक दूसरे के जवाब में गाते हैं दिशाएँ गूँज उठती हैं।...... गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा आदि के अपने–अपने गीत और उन्हें गाने की अपनी–अपनी विधियाँ है। उनका अलग नाम ही पड़ गया है– पहाड़ी।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहात में है। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता, कजरी, बारहमासा, आदि मीरजापुर, बनारस (वाराणसी) और उत्तर प्रदेश के पूर्वी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाए जाते हैं। बाउल और भटियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया भी इसी प्रकार के हैं। हीर–राँझा, सोहनी–महिवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला–मारु के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं।"

(उपर्युक्त अनुच्छेद का धीमी गति से वाचन किया जाएगा तथा तथ्यात्मक बातों को एक से अधिक बार पढ़ा जाएगा और बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनने का संकेत किया जाएगा।)

शिक्षण के अंत में

शिक्षक– गढ़वाल , किन्नौर, कांगड़ा आदि के गीत किस नाम से जाने जाते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– कजरी और बारहमासा कहाँ गाए जाते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– बनारस को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– बंगाल के लोकगीतों के नाम बताएँ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– सोहनी–महिवाल से संबंधित गीत भारत के किस प्रांत में गाए जाते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

बच्चों से तथ्यों पर आधारित प्रश्न–उत्तर करने के पश्चात् कुछ बच्चों से यह अंश पुनः पढ़ने को कहा जाएगा। बच्चों द्वारा पढ़ने के बाद लोकगीत के महत्व पर शिक्षक द्वारा चर्चा की जाएगी। चर्चा के बाद बच्चों को एक या दो प्रकार के लोकगीतों का ऑडियो क्लिप सुनाया जाएगा। लोकगीत का स्तर बच्चों के अनुरूप होगा।

प्रदत्त कार्य– बच्चे अपने परिवेश से संबंधित कोई लोकगीत याद करके आएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 2

दिवस–10

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे संयुक्त व्यंजन एवं संयुक्ताक्षर वाले शब्दों/वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ते हैं।

सहायक सामग्री– संयुक्ताक्षर एवं संयुक्त व्यंजन वाले शब्दों की पर्चियाँ एवं श्यामपट्।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कुछ वाक्य बोलेंगे जिनमें से संयुक्ताक्षर एवं संयुक्त व्यंजन वाले शब्दों को छाँटकर बताने को कहेंगे, जैसे– ''आज हम लोग अंतरिक्ष के बारे में जानेंगे।'' (बच्चों से पूछें कि कौन–से शब्द में आधा अक्षर जुड़ा है और बताने पर शब्द को बोर्ड पर लिख देंगे, जैसे– अंतरिक्ष।)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक संयुक्ताक्षर वाली कुछ पर्चियाँ बच्चों के बीच बाँटकर उनको पढ़कर बताने के लिए कहेंगे एवं बताएँगे कि ये शब्द क्यों विशेष हैं और इनका उच्चारण कैसे करना चाहिए?

शिक्षक– जब अक्षरों को जोड़कर नया अक्षर बनता है तो उसे संयुक्ताक्षर कहते हैं, जैसे– वयस्क में स् और क को जोड़ने से 'स्क' बना है।

बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे एवं शब्द को जोर से बोलकर उच्चारित करेंगे।

शिक्षक– आप सब भी संयुक्ताक्षर वाले दो–दो शब्द बताइए।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक उनके उच्चारण को सही करते जाएँगे एवं पुनः उनसे उच्चारित करने को कहेंगे।

बच्चे शुद्ध उच्चारण करेंगे।

शिक्षक बच्चों को संयुक्त व्यंजन वाले शब्दों की पर्ची पर लिखे शब्द को पढ़कर बताने के लिए कहेंगे।

बच्चे पढ़ेंगे।

शिक्षक– बच्चो! इन शब्दों में संयुक्त व्यंजन का प्रयोग हुआ है। संयुक्त व्यंजन दो व्यंजनों के योग से बना हुआ एक नया व्यंजन होता है। अतः इसका शुद्ध उच्चारण करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि इसमें कौन–कौन से व्यंजन हैं, जैसे–

क् + ष = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

श् + र = श्र

बोर्ड पर कुछ शब्द लिख देंगे, जैसे– पक्षी, अक्षर–बोध, विज्ञापन, मिश्रण, मंत्र, त्रुटि, क्षिप्र इत्यादि।

बच्चों को श्यामपट्ट पर लिखे हुए शब्दों को उच्चारित करने को कहें एवं आवश्यकता पड़ने पर स्वयं उच्चारण करके बताएँ।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक सभी बच्चों को दो शब्द संयुक्ताक्षर वाले और दो शब्द संयुक्त व्यंजन वाले बोलने को कहेंगे तथा सभी बच्चों को उच्चारण पर ध्यान देने के लिए कहेंगे और उच्चारण अशुद्ध होने पर अन्य बच्चों को शुद्ध उच्चारण बताने को कहेंगे।

शिक्षक बच्चों को दो समूह में बाँटकर श्यामपट्ट पर दोनों तरफ कुछ शब्द लिख देंगे एवं प्रत्येक समूह से अपनी तरफ के शब्दों को बोलने के लिए कहेंगे, जैसे–

मोक्ष	कक्षा
अभिज्ञान	संज्ञान
त्रिशूल	पत्र
श्रम	आश्रम
कच्चा	पक्का
पिचकारी	पत्तियाँ
अच्छी	सच्ची
योग्य	ग्यारह

प्रदत्त कार्य– सभी बच्चे संयुक्ताक्षर एवं संयुक्त व्यंजन के प्रयोग वाले पाँच–पाँच शब्दों को लिखकर लाएँगे एवं कक्षा–कक्ष में पढ़कर सुनाएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–11

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे धाराप्रवाह पढ़ते और समझ कर उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के जीवन से संबंधित पोस्टर, चार्ट, वीडियो क्लिप आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत के आधार पर देश के प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के नाम पूछेंगे। क्रांतिकारियों के जीवन से संबंधित घटनाओं पर चर्चा करेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करते हुए बच्चों को उसका अनुकरण वाचन करने का निर्देश देंगे।

मोइना गाँव के बाबुओं की बकरियाँ चराने का काम करती, पर ना तो वह अपने आप को दीन–हीन समझती ना ही मालिकों का एहसान मानती। वह अपना काम करती, घर आ जाती और बुदबुदाती रहती, "क्यों इनका बचा हुआ खाऊँ मैं? मैं तो बढ़िया खाना बनाऊँगी। शाम को हरे पत्ते, चावल, केकड़े और मिर्ची वाला और सारे घर वालों के साथ बैठकर खाऊँगी। वैसे सब लोग अपनी लड़कियों को काम पर नहीं भेजते हैं, पर मोइना की माँ एक पैर से लँगड़ाती थी। वह ज्यादा चल फिर नहीं सकती थी। उसके पिता दूर जमशेदपुर काम की तलाश में गए हुए थे और उसका भाई गौरव जलाऊ लकड़ी लाने जंगल जाता था।

शिक्षक कुछ बच्चों से इस अनुच्छेद का अनुकरण वाचन भी कराएँगे।

शिक्षक– गाँव के बाबुओं की बकरियाँ कौन चराता था?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– मोइना मन ही मन क्या बुदबुदाती रहती थी?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

गतिविधि– समूह में कविता का शिक्षक आदर्श पाठ तथा सस्वर पाठ कराएँगे।

आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज सुनूँगा,
हवा सवेरे की चलने पर,
हिल पत्तों का करना 'हर–हर'
देखूँगा पूरब में फैले बादल पीले,
लाल सुनहले!
आज उठा मैं सबसे पहले!
सबसे पहले आज सुनूँगा,
चिड़ियों का डैने फड़काकर
चहक–चहक कर उड़ना 'फर–फर
देखूँगा पूरब में फैले बादल पीले,
लाल, सुनहले!

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या एक को पूर्ण करवाएँगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या दो को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–12

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अधूरी कहानी को पूरा करते हैं तथा पात्रों के आधार पर कहानी का निर्माण करते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, चित्रकार्ड, आई० सी० टी० का प्रयोग।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

- शिक्षक कक्षाकक्ष में व्यवहारिक बातचीत करेंगे।
- शिक्षक बच्चों से उनकी जीवन–शैली के विषय में प्रश्न करेंगे।
- शिक्षक बच्चों से पूछते हैं कि जीवन–शैली अलग–अलग क्यों है?
- शिक्षक परिश्रम के विषय में बच्चों से बातचीत करेंगे।

शिक्षण के मध्य

- बच्चे कार्यपत्रक संख्या एक को शिक्षक की सहायता से पूरा करेंगे।
- इसके बाद बच्चों से कार्यपत्रक संख्या एक को पढ़ने के लिए कहा जाएगा।
- अनुच्छेद पढ़ने के बाद परिश्रम के बारे में बच्चों को बताया जाएगा।

गतिविधि

बच्चों को चार समूहों में बाँटेंगे तथा प्रत्येक समूह में दिए गए दस–दस शब्दों का प्रयोग करते हुए एक नई कहानी निर्माण करने को कहेंगे।

- **समूह एक**

  किसान, गाय, खेत, फसल, बेटा, धन, हरियाली, गाँव, पत्नी, खुश

- **समूह दो**

कारखाना, मज़दूर, नगर, रेल, भीड़, मेहनत, कमरा, दूरी, आनंद, बीमार

- **समूह तीन**

  मंदिर, देवता, पुजारी, घंटा, आरती, मिठाई, भीड़, रात, प्रसन्न, सोना

- **समूह चार**

  शिक्षक, छात्र, कमरा, पढ़ाई, खेल–खिलाड़ी, पुरस्कार, प्रेरणा, स्तर, अनुकूल

शिक्षण के अंत में

- शिक्षक द्वारा कार्यपत्रकों के मूलभूत निष्कर्ष के विषय में बताया जाएगा।
- परिश्रम के महत्व के विषय में बच्चों को शिक्षक द्वारा उदाहरण सहित समझाया जाएगा।
- शारीरिक श्रम से आप क्या समझते हैं?
- क्या बिना परिश्रम के सफलता प्राप्त की जा सकती है?
- किसान के चारो बेटों को खजाना किस रूप में मिला?

प्रदत्त कार्य– कार्यपत्रक संख्या दो को ध्यान से पढ़कर दी गई अधूरी कहानी को पूर्ण करें। (**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–13

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कविता को पूरा करते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

1– सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों से उनकी मनपसंद कविता सुनाने को कहेंगे।

2– सुनाई हुई कविता से तुकबंदी वाले शब्दों को समझाएँगे।

3– शिक्षक बच्चों को एक कविता स्वयं सुनाएँगे।

'माँ कह एक कहानी,
राजा था या रानी,
माँ कह एक कहानी।'
'तू है हठी मानधन मेरे,
सुन उपवन में बड़े सवेरे।
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी।'
'जहाँ सुरभि मनमानी।
हाँ! माँ कह एक कहानी।'

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को दो समूह में बैठाकर कार्यपत्रक संख्या एक के माध्यम से कविता पूर्ण करने के लिए कहेंगे, बीच–बीच में शिक्षक बच्चों की कठिनाइयों का निवारण करते जाएँगे।

शिक्षक दोनों समूह के दो–दो बच्चों से कविता का प्रस्तुतीकरण कराएँगे। बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए कार्यपत्रक संख्या दो में दी गई कविता को पूर्ण करने को कहेंगे।

शिक्षक दोनों समूह के दो–दो बच्चों से पूर्ण की गई कविता का प्रस्तुतीकरण तथा संबंधित कार्यपत्रक पर कार्य करवाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को यह समझाएँगे कि कविता की पहली पंक्ति के अनुसार ही उसकी दूसरी पंक्ति का निर्माण होता है। कविता लिखने के लिए सबसे पहले तुकांत शब्दों को एक साथ लिखेंगे। इन्ही तुकांत शब्दों को पंक्ति के अंत में रखते हुए ही कविता का निर्माण करेंगे। इसके साथ यह भी ध्यान रखेंगे कि कविता अर्थ–पूर्ण हो तथा उसे सुनने में तारतम्यता बनी रहे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या तीन में दिए गए शब्दों की सहायता से कविता निर्मित करने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–14

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सर्वनाम के भेद को पहचान कर उसके प्रकारों को बताते हैं।

सहायक सामग्री– सर्वनाम शब्दों का चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक द्वारा सर्वनाम की अवधारणा को स्पष्ट किया जाएगा। सर्वप्रथम बच्चों को सर्वनाम से संबंधित चार्ट दिखाया जाएगा तथा चार्ट पर लिखे सर्वनाम शब्दों को पढ़ने के लिए कहा जाएगा–

मैं, तुम, तुम्हारा, आपका, आप, उस, इस, यह, वह, हम, हमारा

इन शब्दों को पढ़ने के बाद बच्चों से पूछेंगे कि इस प्रकार के शब्दों को क्या कहा जाता है?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि चार्ट पेपर पर लिखे शब्दों को सर्वनाम शब्द कहते हैं। सर्वनाम शब्दों का प्रयोग नाम के स्थान पर किया जाता है, जैसे–

- राम ने कहा कि वह बाजार जा रहा है।

इस वाक्य में **वह** शब्द का प्रयोग राम के स्थान पर किया गया है।

- सीमा ने कहा कि मैं खाना बना रही हूँ।

इस वाक्य में **मैं** शब्द का प्रयोग सीमा के स्थान पर किया गया है।

अर्थ की दृष्टि से सर्वनाम के छह भेद होते हैं–

1– पुरुषवाचक सर्वनाम
2– निश्चयवाचक सर्वनाम
3– निजवाचक सर्वनाम
4– संबंधवाचक सर्वनाम

5– अनिश्चयवाचक सर्वनाम 6– प्रश्नवाचक सर्वनाम

शिक्षक सर्वनाम के भेद वाले शब्दों से बच्चों का परिचय करावाएँगे।

पुरुषवाचक सर्वनाम– पुरुषवाचक सर्वनाम पुरुषों/व्यक्तियों के नाम के बदले आते हैं, इससे स्त्री व पुरुष दोनों का बोध होता है।

जैसे– मैं, हम, तुम, यह, वह, ये, वे।

निश्चयवाचक सर्वनाम– निश्चयवाचक सर्वनाम से पास या दूर की वस्तु का निश्चित बोध होता है, जैसे–

- वह खिलौना बहुत अच्छा है।
- यह लड़का पढ़ने में तेज है।
- वह लड़की बहुत सुन्दर है।
- मैं यह खरीदूँगा, वह नहीं।

निजवाचक सर्वनाम– निजवाचक सर्वनाम 'आप' कर्ता के विषय में कुछ बताता है, पर वह स्वयं कर्ता नहीं होता है।

जैसे– मैं यह काम अपने आप कर सकती हूँ।

संबंधवाचक सर्वनाम– इसमें दो वस्तुओं तथा व्यक्तियों का पारस्परिक संबंध प्रकट होता है, जैसे–

- मेरे पास एक किताब है, जो हिन्दी की है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम– जो सर्वनाम किसी ऐसे व्यक्ति या पदार्थ का बोध कराए जिसका कोई पता ठिकाना ज्ञात ना हो, जैसे–

- कोई आया था।
- घर में कुछ नहीं है।

प्रश्नवाचक सर्वनाम– जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध होता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे–

- यह कौन है?
- तुम कैसे हो?

शिक्षण के अंत में

शिक्षक सभी बच्चों से सर्वनाम शब्द से संबंधित वाक्य लिखवाकर पहचान करने के लिए कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देश के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 3

दिवस–15

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विशेषण के भेदों को जानते हैं और बोल–चाल में इनका प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– बड़े अक्षरों में कविता लिखा चार्ट, विशेषण के भेद लिखा हुआ चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कक्षा में कविता लिखा चार्ट प्रस्तुत करेंगे–

नटखट बालक दौड़ा आया,
संग में चार खिलौना लाया।
वकील जज के अजब हैं ढंग,
बस कार के लाल हैं रंग।।

बच्चों के बीच कविता प्रस्तुत करने के बाद शिक्षक पूछेंगे कि–

शिक्षक– बालक कैसा है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– बालक कितने खिलौने लाया?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक बच्चों से कहेंगे कि ये दोनो ¼नटखट और चार½ ही विशेषण शब्द हैं।

ये दोनों विशेषण शब्द के दो प्रकार हैं।

यहाँ 'नटखट' गुणवाचक विशेषण है जबकि 'चार' संख्यावाचक विशेषण है।

शिक्षण के मध्य

हम आज विशेषण के भेदों को जानेंगे। विशेषण के भेद इस प्रकार हैं–

(अब शिक्षक विशेषण के भेद का चार्ट पेपर कक्षा–कक्ष में दिखाएँगे।)

विशेषण

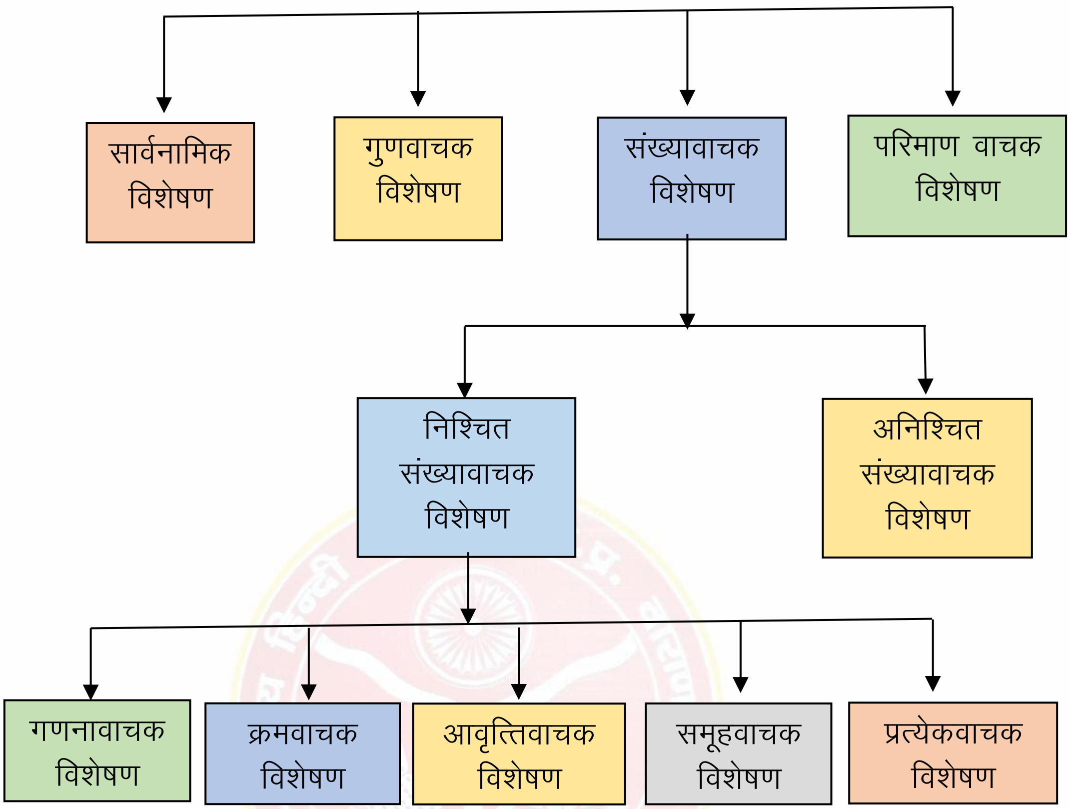

शिक्षक इन विशेषण भेदों को कुछ उदाहरण देते हुए बच्चों को समझाएँगे।

1– सार्वनामिक विशेषण– जो सर्वनाम संज्ञा के पहले प्रयुक्त होकर विशेषण बताते हैं वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं, जैसे– उस कमरे में कूलर रखा है। वह खिलाड़ी अच्छा खेल रहा है।

2– गुणवाचक विशेषण– जिस शब्द से संज्ञा अथवा सर्वनाम के गुण, दशा, रंग, आकार, स्वभाव, स्थिति, काल आदि का पता चले उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे– मोटा भालू जा रहा है। घना जंगल दूर तक फैला है।

3– संख्यावाचक विशेषण– यह विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराता है। जैसे– कमरे में 25 कुर्सियाँ हैं। आज कम छात्र उपस्थित हैं।

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं–

क– **निश्चित संख्यावाचक विशेषणः–** ऐसा विशेषण शब्द जिसमें निश्चित क्रम, आवृत्ति, समूह, प्रत्येक का बोध हो, निश्चित वाचक विशेषण कहलाता है।

यह पाँच प्रकार का होता है–

1. गणनावाचक विशेषणः– तीन, पाँच, आठ आदि।
2. क्रमवाचक विशेषणः– दूसरा, तीसरा, पाँचवाँ आदि।
3. आवृत्तिवाचक विशेषणः– दूना, तिगुना, चौगुना, सौ गुना आदि।
4. समूहवाचक विशेषणः– गायें, बच्चे, मेला, झुंड, परिवार, दर्जन, गिरोह आदि।
5. प्रत्येकवाचक विशेषणः– प्रतिमास, प्रतिवर्ष, प्रतिसप्ताह, प्रतिदिन आदि।

ख– **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणः–** ये निश्चित संख्या का बोध नहीं कराते हैं, इनमें अनिश्चितता बनी रहती है, जैसे– कुछ, अनेक, थोड़ा, बहुत, अधिकांश, ज्यादा आदि।

4– परिमाणवाचक विशेषण– यह विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की माप तौल सम्बन्धी विशेषता को बताता है, जैसे– 3 मीटर कपड़े से यह शर्ट बनी है। टंकी में थोड़ा पानी ही बचा है।

1. **निश्चित परिमाणवाचक–** ये विशेषण किसी वस्तु की निश्चित मात्रा या परिमाण का बोध कराते हैं, जैसे– तीन लीटर तेल, चार किलो चीनी।
2. **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण–** ये विशेषण किसी वस्तु की निश्चित मात्रा का बोध नहीं कराते हैं, उन्हें अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण कहलाते हैं , जैसे– कुछ दूध, कुछ फल।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को एक अनुच्छेद पढ़ने को देंगे और उसमें विशेषण शब्द खोजने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– बच्चे घर से सभी प्रकार के विशेषण के कम से कम पाँच शब्द लिखकर लाएँगे। (**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के चार कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–16

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– कहानी के माध्यम से छोटे–छोटे संवाद बोलते हैं।

सहायक सामग्री– कहानी से संबंधित चित्र, जमीन के अन्दर पैदा होने वाली सब्जियों तथा जमीन के ऊपर पैदा होने वाली फसलों के चित्र, बंदर का मुखौटा आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से कहानी के बारे में चर्चा करेंगे। शिक्षक हाव–भाव के साथ कहानी का वाचन करेंगे, जैसे–

किसान का खेत एक बाग के पास था। उस बाग में बहुत बंदर रहते थे। किसान ने अपने खेत में मूँगफली की फसल बो रखी थी। मूँगफली जब तैयार हो गई तो बंदर उसे उखाड़कर खाने लगे।

किसान ने उन्हें भगाने के लिए बहुत उपाय किया परन्तु वह बंदरों को रोक नहीं पा रहा था। फसल को बचाने के लिए उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। एक दिन एक बूढ़े व्यक्ति ने किसान को कुछ उपाय सुझाएँ और उन उपायों के द्वारा उसने अपनी फसल की रक्षा की।

शिक्षक बच्चों से बात करेंगे कि सोचकर बताओ उस आदमी ने किसान को कौन–कौन से उपाए बताए होंगे।

शिक्षक बच्चों की बात सुनकर उनसे चर्चा करेंगे।

शिक्षण के मध्य

- शिक्षक कार्यपत्रक पर बने चित्र पर बच्चों से बातचीत करेंगे।
- चित्र के आधार पर शिक्षक कहानी का वाचन करेंगे।

- कहानी के आधार पर बच्चों से प्रश्न करेंगे।
- शिक्षक बच्चों से अपने शब्दों में कहानी सुनाने को कहेंगे।
- शिक्षक बच्चों से बंदर और किसान के मुखौटे बनाकर छोटे–छोटे संवाद के माध्यम से अभिनय करवाएँगे, जैसे–
    - ➢ मुझे क्यों मारते हो?
    - ➢ फसल आने दो, जो कहोगे वही खिलाऊँगा ।
    - ➢ देखो इस बार जमीन के नीचे की फसल मेरी और ऊपर की तुम्हारी।
    - ➢ भालू खीझकर रह गया।

शिक्षण के अंत में

बच्चों को दो समूहों में बाँटकर जमीन के नीचे और जमीन के ऊपर उगने वाली फसलों के चित्र को देखकर अलग अलग करने को कहेंगे।

शिक्षक बच्चों से पूछेंगे कि यदि तुम भालू होते तो क्या करते?

प्रदत्त कार्य– निम्नलिखित शब्दों की सहायता से कहानी लिखिए।

जंगल, शिकारी, शेर, खरगोश।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–17

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दिए गए वाक्यों की सहायता से कविता पूरी करते हैं। कविता में आए हुए प्रमुख शब्दों के बारे में अपने विचार लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, रंग, पेंसिल, ब्रश, विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों से उनकी मनपसंद कविता सुनाने को कहेंगे।

शिक्षक बच्चों को 'प्रकृति की सीख' कविता सुनाएँगे–

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।
समझ रहे हो क्या कहती हैं,
उठ–उठ गिर–गिर तरल तरंग।
भर लो भर लो मन में अपने,
मीठी–मीठी मृदुल उमंग।
पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

शिक्षक कविता में आए हुए तुकबन्दी वाले शब्दों को भी समझाएँगे तथा उनका अर्थ बताकर बोध–प्रश्न पूछेंगे–

1– कविता में पर्वत क्या संदेश दे रहा है?

2– कविता में तरंग क्या कह रही है?

3– कविता में धैर्य न छोड़ने की बात क्यों कही जा रही है?

4– 'ढक लो तुम सारा संसार' से क्या आशय है?

शिक्षण के मध्य

- बच्चों को दो समूह में बैठाकर शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या एक में दिये गये वाक्यों की सहायता से कविता पूरी करने को कहेंगे।
- शिक्षक बीच–बीच में बच्चों का सहयोग भी करेंगे।
- शिक्षक बच्चों के तीन समूह बनाकर कार्यपत्रक संख्या दो के द्वारा दिए गए शब्दों के बारे में तीन–तीन वाक्य लिखने को कहेंगे।
- कार्यपत्रकों का प्रस्तुतीकरण दोनों समूहों से कराएँगे।

शिक्षण के अंत में

बच्चों द्वारा किये गये कार्यों का मूल्यांकन करते हुए जिराफ, सूर्य, बरगद, जलेबी इत्यादि शब्दों के प्रयोग से जो कविता निर्मित की गयी है उनके बारे में पूछेंगे।

प्रदत्त कार्य– कार्यपत्रक संख्या तीन को पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4 | दिवस–18

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे स्वयं छोटी कविताओं की रचना कर लेते हैं एवं उसका भावार्थ बता लेते हैं।

सहायक सामग्री– चार्ट पर बने हुए चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक श्यामपट्ट पर एक सरल कविता लिखकर बच्चों से सस्वर पाठ करवाएँगे एवं भावार्थ पर बातचीत करेंगे, जैसे–

यदि तू लौट पड़ेगा थक कर,
अंधड़ काल–बवंडर से डर।
प्यार तुझे करने वाले ही,
देखेंगे तुझको हँस–हँसकर।
खग उड़ते रहना जीवन भर,

बच्चों से भावार्थ का अनुमान लगाने को कहेंगे। बच्चों के अलग–अलग भावार्थ को स्वीकार करते हुए सकारात्मक सुझाव देंगे।

शिक्षण के मध्य

गतिविधि–

शिक्षक बच्चों को बताएँगे की कविता की रचना करने की आवश्यक प्रक्रिया क्या–क्या है–

- कविता का विषय चुनें।

➢ तुकान्त शब्दों का प्रयोग करें।

➢ प्रत्येक पंक्ति एक दूसरे से संबंध रखती हो।

शिक्षक बच्चों को चार्ट पर बने हुए चित्रों को दिखाकर पूछेंगे कि यह चित्र किस विषय से संबंधित है।

बच्चे जब शीर्षक का अनुमान लगा लें तब बच्चों से ही शब्द पूछते हुए एक छोटी कविता की रचना करेंगे, जैसे–

पानी बरसा छाता लाओ
कागज की एक नाव बनाओ
पानी में उसको तैराओ
खेलो कूदो मौज मनाओ।

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि किसी भी पद्यांश के कठिन शब्दों के अर्थ को समझकर उसके विचारों को संक्षेप एवं सरल भाषा में लिख/बता पाना ही उसका भावार्थ है।

जैसे– उपर्युक्त रचित कविता में एक छोटा बच्चा बरसात होने पर क्या–क्या करना चाहता है, यही इस कविता का भावार्थ है।

शिक्षक बच्चों को किसी भी विषय पर चार से छह पंक्तियों की कविता लिखने और सुनाने को कहेंगे। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक बच्चों को कविता रचना में सहायता करेंगे।

शिक्षण के अंत में

सभी बच्चे अपनी लिखी हुई कविता को एक दूसरे को सुनाएँगे एवं दूसरे बच्चे उसका भावार्थ बताने का प्रयास करेंगे। शिक्षक बच्चों से पूछेंगे कि एक कविता लिखने के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

प्रदत्त कार्य– सभी बच्चे अपने परिवेश से संबंधित किसी भी विषय, व्यक्ति, वस्तु पर एक कविता लिख कर लाएँगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–19

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कविता को हाव–भाव और लय के साथ प्रस्तुत करते हैं तथा कविता पर चर्चा करने के पश्चात् दिए गए प्रश्नों का उत्तर लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कविता चार्ट (चित्र), कार्यपत्रक, विषय से संबंधित चित्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक द्वारा प्रस्तावित प्रश्न	संभावित उत्तर
1. पक्षी कहाँ उड़ते हैं?	आसमान में।
2. रात को आसमान में क्या–क्या दिखाई देता है?	चांद–तारे, बादल।
3. आप बादल के विषय में क्या–क्या जानते है?	बच्चे अलग–अलग उत्तर देंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक द्वारा बच्चों को एक कविता सुनाई जाएगी–

बना–बनाकर
चित्र सलोने
यह सूना आकाश सजाया
राग दिखाया
रंग दिखाया
क्षण–क्षण छवि से चित्त चुराया
बादल चले गए वे।

आसमान अब
नीला–नीला
एक रंग रस श्याम सजीला
धरती पीली
हरी रसीली
शिशिर–प्रभात समुज्ज्वल गीला
बादल चले गए वे।
दो दिन दु:ख का
दो दिन सुख का
दु:ख–सुख दोनों संगी जग में।

शिक्षक उपर्युक्त कविता पर बातचीत करते हुए बच्चों को यह बताएँगे कि बादल के आने पर बरसात होती है।

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों के समक्ष हाव–भाव और लय के साथ कविता का सस्वर पाठ करेंगे। यह सस्वर पाठ बच्चों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एक से अधिक बार भी किया जा सकता है।

शिक्षक कविता को स्वयं दुहराते हुए बच्चों से एक–एक पंक्ति का सामूहिक पाठ कराएँगे। अलग–अलग बच्चों से सस्वर पाठ करवाएँगे। पूरी कविता का सस्वर वाचन करने के पश्चात् बच्चों से कविता में प्रयुक्त तुकान्त शब्दों को चुनने के लिए कहें, जैसे– पीली, सजीली।

शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे –

- मोर कब नाचता है?
- बरसात न हो तो जीवन कैसा होगा?
- बादल का चित्र बनाएँ।

गतिविधि 2–

बच्चों को दो समूहों में बाँट दें। दोनों समूह कविता को पढ़कर उसमें आए विलोम शब्दों को एक–दूसरे से पूछेंगे, जैसे–

समूह 1–	समूह 2–
सुख	....
....	दिन
मित्र	....
....	बड़ा
आकाश	....

शिक्षक द्वारा कविता में आए कठिन शब्दों का अर्थ बच्चों की सहायता से स्पष्ट किया जाए।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक पूरी कविता का सारांश समझाने के लिए बच्चों से निम्न कार्य करवाएँ–

1. बच्चों को दो छोटे समूह में बैठाकर दो–दो पंक्तियों का भाव लिखने के लिए कहेंगे।
2. कक्षा के एक या दो बच्चों से लयात्मक पाठ कराएँगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो में दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए एक कविता लिख कर लाने को कहेंगे, जिसकी प्रत्येक पंक्ति के अंत में गोल शब्द आए, जैसे– चाचा जी की छतरी गोल।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 4

दिवस–20

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अनुच्छेद को पढ़ते हुए उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– विभिन्न रंगो की पट्टियाँ, ध्वज, फ्लैश कार्ड आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

- शिक्षक कक्षा–कक्ष में व्यावहारिक बातचीत करेंगे।
- शिक्षक बच्चों से भारत के राष्ट्रीय दिवस के विषय में प्रश्न करेंगे।
- राष्ट्रीय दिवस पर क्या–क्या गतिविधियाँ होती हैं, शिक्षक द्वारा छात्रों से पूछा जायेगा।
- शिक्षक राष्ट्रध्वज के विषय में बच्चों से पूछेंगे।

शिक्षण के मध्य

- शिक्षक कार्यपत्रक में दिए गए अनुच्छेद का वाचन करेंगे।
- बच्चों से अनुच्छेद को पढ़ने के लिए कहा जाएगा।

- अनुच्छेद पढ़ने के बाद राष्ट्रध्वज के विषय में छात्रों को बताया जाएगा।
- राष्ट्रध्वज के विभिन्न रंगो के अर्थ को स्पष्ट किया जाएगा।
- बच्चों के दो समूह बनाकर परिचर्चा करने लिए कहा जाएगा।
- अनुच्छेद–संबंधी प्रश्नों को बच्चों से पूछा जाएगा तथा तुरन्त ही उनको पुनर्बलन दिया जाएगा।
- राष्ट्रीय ध्वज में कौन–कौन से रंग होते हैं?
- राष्ट्रीय ध्वज के बीच में चक्र किस रंग का होता है?
- राष्ट्रीय ध्वज में हरे रंग का क्या तात्पर्य है?
- राष्ट्रीय ध्वज कब–कब फहराया जाता है?

शिक्षण के अत में

शिक्षक एक बार पुनः कहानी को संक्षेप में बच्चों को बताते हुए निम्नलिखित प्रश्न करेंगे–

- राष्ट्रीय ध्वज के विभिन्न रंगों के अर्थ को लिखिए।
- राष्ट्रीय ध्वज किन–किन अवसरों पर फहराया जाता है?
- राष्ट्रीय ध्वज के बीच में जो चक्र है, उसे क्या कहते हैं तथा उसमें कितनी तीलियाँ होती हैं?

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देश के अनुसार पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–21

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे क्रिया की पहचान कर लेते हैं और उनका दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं ।

सहायक सामग्री– चार्ट पेपर, फ्लैश–कार्ड आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कुछ वाक्य श्यामपट्ट पर लिखेंगे, जैसे–

1. गीता नाच रही है।
2. बच्चा दूध पी रहा है।
3. सुरेश कॉलेज जा रहा है।
4. शिवाजी बहुत वीर थे।

शिक्षक– इन वाक्यों में क्या घटना/क्रिया हो रही हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– इनको व्याकरण की भाषा में क्या कहते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– इनमें नाच रही है, पी रही है, जा रहा हैं, इन सभी शब्दों से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध हो रहा है। अतः यह क्रियाएँ है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि–

"जिस शब्द अथवा शब्द–समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा किए जाने का बोध हो, उसे क्रिया कहते है।"

क्रिया के दो भेद होते हैं–

1. अकर्मक क्रिया
2. सकर्मक क्रिया

शिक्षक बच्चों को दो समूह में बाँटकर उन्हें अकर्मक और सकर्मक नाम देंगे–

समूह 1–

अकर्मक क्रिया– जिन क्रियाओं का प्रभाव कर्ता पर ही पड़ता है, वे अकर्मक क्रिया कहलाती है।

उदाहरण– 1– राकेश रोता है।
2– साँप रेंगता है।
3– बस चलती है।

कुछ अकर्मक क्रियाएँ
लजाना, होना, बढ़ना, ,सोना, खेलना, अकड़ना, डरना, बैठना, हँसना, जीना, दौड़ना, रोना, ठहरना, चमकना, डोलना,

समूह 2–

सकर्मक क्रिया– जिन क्रियाओं का प्रभाव कर्ता पर नहीं, कर्म पर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है। इन क्रियाओं में कर्म का होना आवश्यक होता है।

उदाहरण– 1– मैं लेख लिखता हूँ।
2– सुरेश मिठाई रखता है।
3– मीना फल खाती है।
4– सोहन दूध पीता है।

कुछ सकर्मक क्रियाएँ

पीना	**खाना**	**नाचना**
पढ़ना	**लिखना**	**गाना**

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या एक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार पूरा करने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या दो को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 5

दिवस–22

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे उपसर्ग तथा प्रत्यय को समझते हैं और उनको वर्गीकृत करते हैं।

सहायक सामग्री– उपसर्ग एवं प्रत्यय लिखे फ्लैश–कार्ड ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक शिक्षण के शुरुआत में कुछ वाक्य बोलते हुए उसको श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे।

वाक्य– जैसे ही अमित के गले में हार पहनाया गया, वैसे ही सुमित ने उसके ऊपर प्रहार किया।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से रेखांकित शब्द हार और प्रहार के विषय में चर्चा करते हुए बताएँगे कि हार का अर्थ ऊपर के वाक्यांश के अनुसार गले में पहनाई जाने वाले माला तथा हार में प्र शब्द जोड़ने से बने शब्द प्रहार का अर्थ हमला करना है।

"जो शब्दांश किसी शब्द के शुरु में आकर उसके अर्थ में विशेषता या बदलाव ला देता है, उसे उपसर्ग कहते है।"

जैसे– निर् + जन = निर्जन

दुर् + जन = दुर्जन

यहाँ निर्, दुर् दोनों शब्दांश जुड़कर 'जन' शब्द का अर्थ बदल रहे हैं। शिक्षक इस उदाहरण के द्वारा बच्चों को समझाते हुए बच्चों को उपसर्ग के फ्लैश–कार्ड देकर उन्हें अन्य शब्दों से जोड़कर नए शब्द बनाते हुए अपनी कॉपी पर लिखने को कहेंगे।

प्र	प्रति	निस्
परा	उप	स्व

जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसका अर्थ बदल देता है, ऐसे शब्दांशों को प्रत्यय कहते हैं।

बचपन कितना अच्छा होता है। अपनत्व से भरा।

शिक्षक इसको रेखांकित करते हुए बच्चों को समझाएँगे–

जैसे– बच्चा + पन = बचपन ।

कुशल + ता = कुशलता

शिक्षक इस उदाहरण को समझाते हुए बच्चों को प्रत्यय के फ्लैश–कार्ड देकर उन्हें जोड़कर नए शब्द बनाते हुए अपनी कॉपी पर लिखने को कहेंगे।

ई	इन	आई
ता	इक	आवट

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या दो को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार पूरा करने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देश के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–23

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपने विचारों को क्रमबद्ध रुप से प्रस्तुत करते हैं और लिखते हैं।

सहायक सामग्री– डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् जी का छाया चित्र, वर्णमाला का चार्ट आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों से सामान्य बातचीत के आधार पर शिक्षक दिवस से परिचित कराने का प्रयास करेंगे। बच्चों से कुछ प्रश्न जैसे– आप कोई विशेष दिवस कब और क्यों मनाते हैं? इसी प्रकार के प्रश्न पूछकर उन्हें शिक्षक दिवस के सन्दर्भ में समझाएँगे।

शिक्षण के मध्य

निम्नलिखित अनुच्छेद का शिक्षक आदर्श वाचन करेंगे–

हमारे जीवन, समाज और देश में शिक्षकों के योगदान को सम्मान देने के लिये प्रत्येक वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। 5 सितम्बर को ही भारत के एक महान व्यक्ति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन था। वे शिक्षा के प्रति अत्यधिक समर्पित थे और एक अध्येता, राजनयिक, और आमतौर से एक शिक्षक के रूप में जाने जाते थे। 1962 में जब वह भारत के राष्ट्रपति बने तो कुछ विद्यार्थियों ने 5 सितम्बर को उनका जन्मदिन मनाने का निवेदन किया। उन्होने कहा कि 5 सितम्बर को मेरा जन्मदिन मनाने के स्थान पर इस दिन को अध्यापन के प्रति मेरे समर्पण के लिए शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए। उनके इस कथन के बाद पूरे भारत में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

शिक्षक– भारत में शिक्षक दिवस कब और क्यों मनाया जाता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन कौन थे?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द बताइए–

अध्येता ————————	राजनयिक————————
अध्यापक ————————	समर्पित————————

नोट– यदि शिक्षक चाहें तो कक्षा–कक्ष में रोचकता बनाये रखने एवं विषय–वस्तु को और आकर्षक बनाये रखने के लिए निम्नलिखित गतिविधि को करा सकते हैं।

शिक्षक बच्चों को दो समूहों में बाँटेंगे।

शिक्षक एक वर्ण जैसे 'स' बोलेंगे।

शिक्षक एक समूह को संकेत देंगे कि वह दो वर्णों या तीन वर्णों के सार्थक शब्द बनाए, जैसे– सफल

इसी प्रक्रिया को तीन बार करने के बाद शिक्षक चार, पाँच, छह वर्णों के शब्दों की ओर बढ़ें।

बच्चों से प्रश्नोत्तर के बाद एक बार पुनः अनुच्छेद पर बच्चों से चर्चा करेंगे और बच्चों से शिक्षक दिवस मनाए जाने के सन्दर्भ में बातचीत करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को स्कूल में मनाये जाने वाले किसी अन्य दिवस के विषय में सम्पूर्ण जानकारी एकत्रित करके आने का निर्देश देंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को महात्मा गांधी के बारे में दस वाक्य याद करके आने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–24

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दन्त्य 'स', मूर्धन्य 'ष' व तालव्य 'श' के उच्चारण स्थान को जानते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ते हैं।

सहायक सामग्री– श, ष, स से संबंधित शब्दों के वीडियो क्लिप, चार्ट पेपर आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों से औपचारिक बातचीत करते हुए बच्चों को इस तरह बैठाएँ कि वे दिखाए जाने वाले वीडियो क्लिप को सुगमता से देख सकें। (वीडियो अनुपलब्ध हो तो चार्ट का प्रयोग करें।) वीडियो क्लिप को अन्तिम पी0पी0टी0 पर रोककर बच्चों से कहें– ''बच्चो आपने वीडियो क्लिप देखा अब स्क्रीन पर दिखाई दे रहे शब्दों को अपनी कॉपी में लिखिए।''

(शिक्षक कक्षा–कक्ष में घूमकर अवलोकन करेंगे।)

शिक्षण के मध्य

सर्वप्रथम श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखें– साहस, सामान, साइमन, सहसा, आसमान, सफलता इत्यादि। अब बच्चों से कहें कि–

"बच्चो, श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों में जिस 'स' का प्रयोग किया गया है इसे 'दन्त्य स' कहते हैं और इसका उच्चारण स्थान **दाँत** होता है।" (साथ ही 'दन्त्य स' को श्यामपट्ट पर लिखें।)

अब बच्चों से कहें कि आपकी कॉपी में लिखे गए शब्दों में जहाँ ''दन्त्य स'' का प्रयोग हुआ हो उस पर गोला बनाएं।

(शिक्षक कक्षा–कक्ष में घूमकर अवलोकन करें।)

दन्त्य 'स'	मूर्धन्य 'ष'	तालव्य 'श'
साहस	वर्षा	शिक्षा
सहसा	पुरुष	विशाल
सामान	कृषक	शौक
साइमन	आकर्षण	शरबत
आसमान	भाषा	अशोक
सफलता	मंजूषा	शैतान
सरसो	घर्षण	आकाश
सड़क	षटकोण	शीशम
सपेरा	भाषण	शेर

शिक्षक श्यामपट्ट पर पुनः कुछ शब्द लिखेंगे–

वर्षा, पुरूष, कृषक, आकर्षण, भाषा, मंजूषा इत्यादि अब बच्चों से कहें कि–

"बच्चो, श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों में जिस, 'ष' का प्रयोग किया गया है उसे 'मूर्धन्य ष' कहते हैं। इसका उच्चारण स्थान **मूर्धा** है।" (साथ ही श्यामपट्ट पर 'मूर्धन्य ष' लिखें।)

अब बच्चों से कहें कि आपकी कॉपी में लिखे गए शब्दों में जहाँ 'मूर्धन्य ष' का प्रयोग हुआ हो उस पर गोला बनाएँ।

शिक्षक कक्षा में घूमकर कर अवलोकन करें।

शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिखें–

शिक्षा, विशाल, शौक, शर्बत, अशोक, शैतान, आकाश इत्यादि। अब बच्चों से कहें कि– "बच्चो, श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों को ध्यान से पढ़िए, इन शब्दों में जिस 'श' का प्रयोग किया गया है उसे 'तालव्य श' कहते हैं और इसका उच्चारण स्थान **तालु** होता है।" (साथ ही 'तालव्य श' को श्यामपट्ट पर लिखें।)

अब बच्चों से कहें कि आपकी कॉपी में लिखे गए शब्दों में जहाँ 'तालव्य श' का प्रयोग हुआ हो उस पर गोला बनाएँ।

शिक्षक कक्षा में घूमकर अवलोकन करें।

शिक्षक बच्चों से कहें कि आप जान गये हैं 'स' तीन प्रकार के होते हैं।

श्यामपट्ट पर लिखें

- दन्त्य 'स' का उच्चारण स्थान दाँत।
- मूर्धन्य 'ष' उच्चारण स्थान मूर्धा।
- तालव्य 'श' उच्चारण स्थान तालु।

अब बच्चों से कॉपी में लिखने को कहें।

अब बच्चों से दिया गया कार्यपत्रक भरने को कहें।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देश के अनुसार पूरा करने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देश के अनुसार घर से पूरा करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 5

दिवस–25

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– दिये गए विषय के आधार पर पत्र–लेखन कर लेते हैं।

सहायक सामग्री– पोस्टकार्ड, निमंत्रण–पत्र, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

- शिक्षक विभिन्न प्रकार के पत्रों के प्रारूप पर बच्चों के साथ परिचर्चा करेंगे।
- पत्र किसे कहते हैं, उसके बारे में बताया जाएगा।
- पत्र के प्रकार के विषय में बच्चों से बातचीत की जाएगी।
- पत्र की मुख्य बातों के विषय में बच्चों से चर्चा की जाएगी।
- विभिन्न विषयों पर पत्र किस प्रकार लिखेंगे, बताया जाएगा।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या चार के आधार पर 'फीस माफी' के लिए पत्र कैसे लिखेंगे को स्पष्ट किया जाएगा, जिससे कि बच्चे स्कूल फीस की अवधारणा से परिचित हो जाएँगे। शिक्षक बच्चों को इस विषय पर समूह में विभक्त कर कार्य करने के लिए कहेंगे। इसके बाद बच्चे कार्यपत्रक संख्या चार को पढ़ेंगे तथा उसे पूरा करेंगे। बीच–बीच में बच्चों की शंका का समाधान करेंगे। शिक्षक की सहायता से बच्चे कार्यपत्रक को पूरा करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रकों पर आधरित कुछ प्रश्न पूछेंगे तथा बच्चों द्वारा उत्तर दिए जाने पर उन्हें तुरंत पुनर्बलन प्रदान किया जाएगा।

- पत्र मुख्यतः कितने प्रकार के होते हैं?
- कुछ औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र के उदाहरण दीजिए।
- औपचारिक पत्र के मुख्य बिंदु कौन–कौन–से हैं?

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देश के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के चार कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–26

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर लेते हैं और इन शब्दों का दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– पर्यायवाची शब्द वाले फ्लैश–कार्ड, बड़े अक्षरों में कविता लिखा चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को एक कहानी सुनाएँगे–

एक किसान के तीन बेटे थे। उनके नाम राकेश, सोम एवं शशि थे। वे तीनों बड़े मेहनती और पढ़ाई में मन लगाने वाले थे। उनकी प्रशंसा करते हुए उनके अध्यापक ने कहा, तुम्हारे पिता ने तुम्हारे नाम बड़े अच्छे रखे हैं, तुम उनको अंधकार में भी चंद्रमा के समान प्रकाशित करोगे।

शिक्षक ने बच्चों से पूछा– अध्यापक ने ऐसा क्यों कहा? क्या आप इन नामों के अर्थ जानते हैं?

बच्चे अपनी समझ के आधार पर उत्तर देंगे।

बच्चों के उत्तरों को ध्यानपूर्वक सुनने के बाद शिक्षक समेकन करें कि इन सभी नामों का अर्थ चंद्रमा होता है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों के बीच चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिखी कविता को प्रस्तुत करेंगे। चार्ट पेपर ऐसे स्थान पर लगाया जाएगा जहाँ सभी बच्चे देख सकें।

प्राची दिशा से आए दिवाकर,
सुधाकर निशा संग चले गये।
पक्षी चहचहाने लगे तरुओं पर,
प्रभाकर को देख विहग जग गये।

शिक्षक कविता का दो बार पाठ करेंगे तथा बच्चों के सामने ही समानार्थी शब्दों– दिवाकर–प्रभाकर, पक्षी–विहग को रेखांकित करेंगे तथा बताएँगे कि दिवाकर एवं प्रभाकर सूर्य के ही नाम है। इसी प्रकार पक्षी और विहग चिड़िया के ही नाम हैं। ये शब्द सूर्य एवं पक्षी के पर्यायवाची शब्द हैं।

एक वस्तु या व्यक्ति के दो या दो से अधिक नाम या अर्थ उसके समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

जैसे– पानी को नीर, तोय, वारि, अम्बु, जल आदि नामों से जाना जाता है। ये सभी जल के पर्यायवाची शब्द हैं।

इसी प्रकार पृथ्वी को भू, धरा, वसुधा और वसुन्धरा आदि नामों से भी जाना जाता है। ये सभी पृथ्वी के पर्यायवाची शब्द हैं।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कुछ शब्द और उनके कम से कम पाँच पर्यायवाची शब्द श्यामपट्ट पर लिखेंगे और बच्चों को इनके अर्थ भी बताएँगे। शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार पूरा करने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के चार कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–27

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे शब्दों के अर्थ समझते हैं और उनका विलोम शब्द लिखते हैं।

सहायक सामग्री– चित्रों के फ्लैश–कार्ड, शब्द–कार्ड, चार्ट पेपर पर लिखी एक कविता।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक एक कविता को दो बार हाव–भाव के साथ सुनाएँगे–

प्रकाश को अंधकार कहते
दिन को कहते रात
सोने को जागना कहते
सीधी को उल्टी बात
राजा बोले रंक बताए
निर्धन को धनवान जताए
दिखने में ये खेल से लगते
बताओ इनको क्या हैं कहते?

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों से चर्चा करेंगे कि कविता में आए शब्दों में क्या संबंध है और इनको क्या कहते हैं?

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि ऊपर दी गई कविता में आए शब्दो, जैसे– प्रकाश–अंधकार, सोना–जागना, राजा–रंक, और निर्धन–धनवान एक–दूसरे के विपरीतार्थी/विलोम शब्द हैं।

शिक्षक बच्चों से विपरीतार्थी/विलोम शब्दों पर चर्चा करेंगे। शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर विलोम शब्द लिखे जाएँगे। शिक्षक बच्चों को विलोम/विपरीतार्थी शब्द की परिभाषा बताएँगे ।

शिक्षक बच्चों को चार्ट पर लिखी एक कहानी पढ़कर सुनाएँगे और सुनाने के बाद कहानी में आये रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखने को कहेंगे।

एक राजा था। वह बहुत मोटा था जबकि उसका मंत्री बहुत पतला था। जब वह दोनो जंगल में शिकार करने गये तो उस घने जंगल में छोटे–बड़े कई प्रकार के पेड़ थे। राजा सफेद घोड़े पर बैठा था, जबकि मंत्री काले घोड़े पर, तभी अचानक शेर आया और मंत्री पेड़ पर चढ़ गया और राजा नीचे झाड़ी में छुप गया।

शिक्षण के अंत में

बच्चे चार्ट को देखकर विपरीतार्थी शब्दों को लिखेंगे।

शिक्षक द्वारा बच्चों से कार्यपत्रक पर कार्य करवाया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–28

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे धाराप्रवाह पढ़ते और समझ कर उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– प्रसिद्ध क्रांतिकारियों के जीवन से संबंधित पोस्टर, चार्ट, वीडियो क्लिप आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक द्वारा बच्चों से सामान्य बातचीत के आधार पर देश के प्रसिद्ध क्रांतिकरियों के नाम पूछे जाएँगे। क्रांतिकारियों के जीवन से संबंधित घटनाओं की चर्चा करें।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक दिए गए अनुच्छेद का आदर्श वाचन करते हुए बच्चों से उसका अनुकरण वाचन करवाएँगे।

"प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगत सिंह का जन्म सन् 1907 ई0 को पंजाब के लायलपुर गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह था। सरदार भगत सिंह बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारों वाले थे। बड़े होने पर ये ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहते थे। चद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खाँ जैसे क्रान्तिकारियों की तरह ही भगत सिंह का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है। भगत सिंह हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य थे। साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के सिलसिले में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय पर पुलिस ने प्राणघातक प्रहार किया था। पुलिस अधीक्षक सांडर्स को इसके लिए जिम्मेदार मानते हुए भगत सिंह ने गोलियाँ चलाकर उसकी हत्या कर दी थी। इसी मामले में दूसरा पुलिस अफसर मिस्टफर्म भी मारा गया था। ब्रिटिश सरकार ने अन्यायपूर्ण ढंग से इन्हें 23 मार्च सन् 1931 को फाँसी दे दी।"

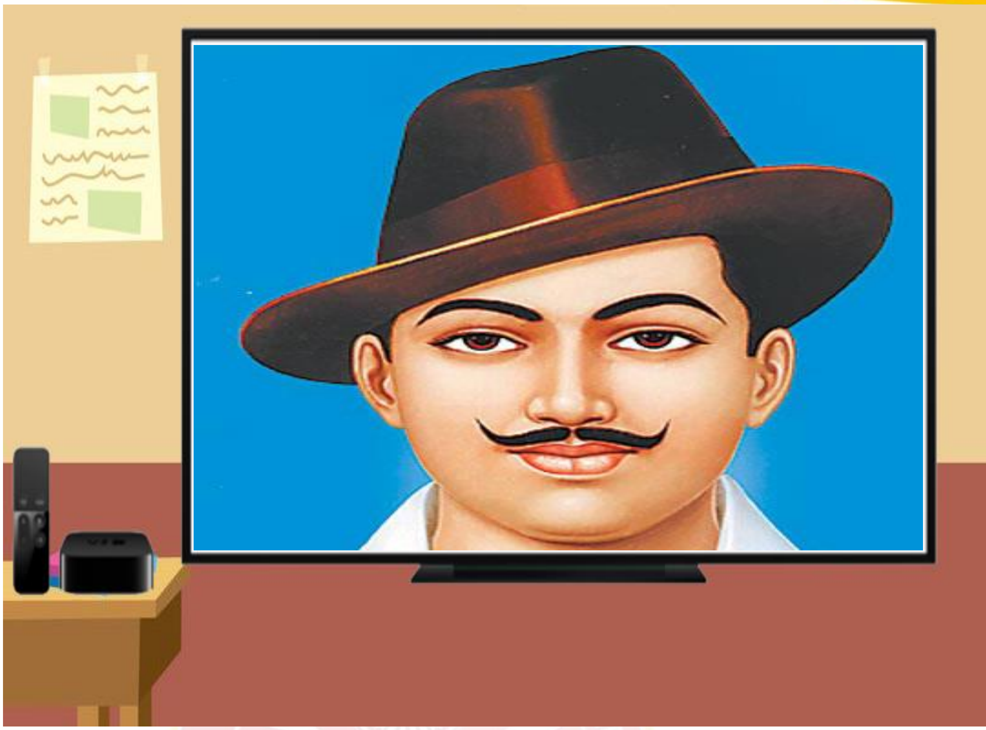

शिक्षक कुछ बच्चों से इस अनुच्छेद का अनुकरण वाचन भी करवाएँगे।

शिक्षक– भगत सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– भगत सिंह के पिता का क्या नाम था?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– भगत सिंह की तरह ही कुछ बड़े क्रान्तिकारियों के नाम बताएँ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– भगत सिंह किस पार्टी के सदस्य थे?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– भगत सिंह ने किसकी हत्या और क्यों की थी?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– भगत सिंह को फाँसी कब दी गई?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक संक्षेप में पुनः एक बार भगत सिंह के जीवन पर प्रकाश डालेंगे।

गतिविधि– समूह में कविता का पाठ

वह खून कहो, किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो, किस मतलब का
आ सके देश के काम नहीं।
वह खून कहो, किस मतलब का
जिसमें जीवन, न रवानी है!
जो परवश होकर बहता है,
वह खून नहीं पानी है!
उस दिन लोगों ने सही–सही
खून की कीमत पहचानी थी।
जिस दिन सुभाष ने वर्मा में
माँगी उनसे कुर्बानी थी।
बोले, "स्वतंत्रता की खातिर
बलिदान तुम्हें करना होगा।
तुम बहुत जी चुके जग में,
लेकिन आगे मरना होगा।

गोपाल प्रसाद व्यास

शिक्षक द्वारा आदर्श पाठ तथा सस्वर पाठ कराया जाएगा।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक द्वारा बच्चों से कार्यपत्रक संख्या एक पर कार्य करवाया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या दो को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 6

दिवस–29

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कठिन शब्दों का सही उच्चारण करते हुए लेखन कार्य करते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द चार्ट, एवं वीडियो क्लिप, विषय से संबंधित चित्र आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को एक वीडियो क्लिप दिखाएँगे या कुछ ऐसे शब्द दिखाएँगे जिसमें सभी मात्राओं (इ–ई, उ–ऊ, ए–ऐ, ओ–औ, अं–अः) वाले शब्द होंगे। बच्चे ध्यान से देखेंगे, जैसे–

स्वतन्त्रता, धैर्य, पराकाष्ठा, विशेषांक, श्रमिक, आँचल, अंशुमान, मृत्युंजय आदि शब्द हो सकते हैं।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक शिक्षण के दौरान दी हुयी कविता का पाठ करवाएँ–

हुआ विवाद सदय–निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में,
गयी बात तब न्यायालय में,
सुनी सभी ने जानी।
सुनी सभी ने जानी।
व्यापक हुई कहानी।
राहुल! तू निर्णय कर इसका,
न्याय पक्ष लेता है किसका।
कह दे निर्भय, जय हो जिसका,
सुन लूँ तेरी बानी।
माँ मेरी क्या बानी।

मै सुन रहा कहानी।
कोई निरपराध को मारे,
तो क्या अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे,
न्याय दया का दानी।
न्याय दया का दानी।
तूने गुनी कहानी।

उपर्युक्त कविता में आए हुए कठिन शब्दों को शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखेंगे और उच्चारण में सहयोग करते हुए वर्ण–विच्छेद कराएँगे। इसके बाद वर्णों का स्वयं उच्चारण करेंगे और बच्चों से भी करवाएँगे, जैसे–

निर्दय– न् + इ + र् + द् + अ + य् + अ
आग्रही– आ + ग् + र् + अ + ह् + ई
स्वविषय– स् + व् + अ + व् + इ + ष् + अ + य् + अ
न्यायालय– न् + य् + आ + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
व्यापक– व् + य् + आ + प् + अ + क् + अ
न्याय– न् + य् + आ + य् + अ
निर्भय– न् + इ + र् + भ् + अ + य् + अ
निरपराध– न + इ + र् + अ + प् + अ + र् + आ + ध् + अ
रक्षक– र् + अ + क् + ष् + अ + क् + अ
भक्षक– भ् + अ + क् + ष् + अ + क् + अ

ऐसे अन्य शब्दों का भी शिक्षक अभ्यास कराएँगे और बच्चों की उच्चारण संबंधी समस्याओं को दूर करेंगे और दिए गए कार्यपत्रकों पर अभ्यास कराएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों द्वारा पूर्ण किए गए कार्यपत्रकों की जाँच करेंगे और पुनः कुछ शब्दों को लिखकर उनका वर्ण–विच्छेद करने के लिए कहेंगे ताकि बच्चों में आ रही उच्चारण–संबंधी कमियों को दूर किया जा सके।

शिक्षक कुछ कठिन शब्दों की पुनरावृत्ति करते हुए काठिन्य–निवारण करेंगे तथा बच्चों से कुछ शब्दों का पुनः अभ्यास कराएँगे, जैसे–

अवर्णनीय, जन्मदात्री, लौकिक, पारदर्शी, सार्थक, कृतज्ञता, पल्लव, अखिल, संशय, प्रलय, शीर्षासन आदि।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को वर्ण–विच्छेद के लिए निम्नलिखित शब्द देंगे तथा बच्चों को वर्ण–विच्छेद लिखकर उच्चारण करने के लिए कहेंगे।

जैसे– परिवर्तन, पुनरागमन, प्रलय, चिकित्सा, समस्याओं , अनभिज्ञ, क्रान्ति, दृष्टिपात, सांत्वना, आश्वासन, संग्राम, कृतज्ञता, समुज्ज्वल, अंतरिक्ष, आदि शब्द हो सकते हैं।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 6

दिवस–30

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समाचार–पत्रों में प्रकाशित सामग्री का अध्ययन कर अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, कुछ दैनिक समाचार–पत्र।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों से देश–विदेश के समाचार प्राप्त करने के माध्यमों पर बातचीत करेंगे। इसके बाद समाचार की आवश्यकता पर चर्चा करते हुए कुछ प्रश्न करेंगे–

शिक्षक– पिछले दो दिनों में आपने आस–पास घटित कुछ घटनाओं के बारे में बताइए।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– पिछले दो दिनों में आपके जिले में घटित कुछ घटनाओं के बारे में बताइए।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– यदि आपको देश–विदेश में घटित घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करनी हो तो कैसे प्राप्त करेंगे?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को समाचार–पत्र दिखाते हुए उसमें छपने वाले विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा करेंगे–

- सरकारी विभागों द्वारा जनहित में की गयी अपील–
- सम्पादकीय पेज
- खेल
- देश–विदेश
- विज्ञापन
- समसामयिक विषयों पर छपने वाले लेख
- क्षेत्रीय समाचार

शिक्षक बच्चों से इन विषयों पर चर्चा करने के पश्चात् समाचार–पत्र में किस स्थान पर क्या छपता है, दिखाएँगे तथा बच्चों के प्रश्नों के उत्तर भी देंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को दो समूह में बाँटकर कार्यपत्रक को दिए गए निर्देशों के अनुसार पूरा करने को कहेंगे।

शिक्षक बच्चों के किए गए कार्यों का मूल्यांकन करेंगे तथा पुनः समाचार–पत्र दिखाते हुए चर्चा करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक कुछ समाचार–पत्रों के नाम तथा उसकी कटिंग घर से पन्ने पर चिपकाकर लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के चार कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–31

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे समाचार–पत्रों में दिए गए विज्ञापन के द्वारा विज्ञापित वस्तु की जानकारी तथा समाचार–पत्र के संपादकीय अंशों को समझते हैं।

सहायक सामग्री– विभिन्न प्रकार के समाचार–पत्र, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों के विभिन्न प्रकार के समाचार–पत्रों और उनमें विज्ञापित विज्ञापनों को दिखाते हुए उनकी चर्चा करेंगे। समाचार–पत्र के संपादकीय पृष्ठ को पढ़कर समझाएँगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को दो समूह में बैठाकर कार्यपत्रक संख्या एक और दो के माध्यम से विज्ञापित वस्तु से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखने को कहेंगे तथा बीच–बीच में उनकी सहायता भी करेंगे, कुछ बच्चों से दोनों कार्यपत्रकों का प्रस्तुतीकरण कराएँगे।

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों को तीन समूहों में बैठाकर अलग–अलग प्रकार के समाचार–पत्र बाँट देंगे। तीनों समूहों को यह निर्देश देंगे कि वह अपने अपने समाचार–पत्रों से विभिन्न विज्ञापनों को खोज कर उदाहरण अनुसार निम्नलिखित प्रकार से सूचीबद्ध करें–

विज्ञापित वस्तु का नाम	उत्पाद का नाम	प्रतीक लोगो	ध्येयवाक्य

जैसे– कपड़े धोने वाला पाउडर	**घड़ी**		**पहले इस्तेमाल करें, फिर विश्वास करें।**

शिक्षक बच्चों के कार्यों का निरीक्षण करेंगे उन्हें उचित सुधार/समाधान देंगे एवं विज्ञापनों के एक–एक बिंदु पर बच्चों का पूरा ध्यान आकर्षित करते हुए उनके बारे में विस्तार देंगे।

गतिविधि 2–

शिक्षक बच्चों में विज्ञापन–लेखन के प्रति आकर्षण और उसके कौशल–विकास के लिए निम्नलिखित विषयों पर विज्ञापन तैयार करने को कहेंगे जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं–

सर्व शिक्षा अभियान
महिला सशक्तीकरण
पोलियो अभियान
कन्या सुमंगला योजना
स्वच्छता अभियान
सड़क सुरक्षा अभियान

विज्ञापन का शीर्षक	लोगो/प्रतीक	ध्येयवाक्य	इसके अंतर्गत होने वाले कार्य

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को समाचार–पत्रों में आए हुए विज्ञापनों एवं संपादकीय अंश को दिखाकर कार्यपत्रक के माध्यम से उसके महत्त्व को समझाएँगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या तीन को घर से पूर्ण करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 7

दिवस–32

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे सामान्य बातचीत और लेखन में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का अर्थ बताते हैं और वाक्य–निर्माण में मुहावरों का प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– पुस्तक, चार्ट, चित्र–कार्ड।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक पाठ्यपुस्तक में संकलित 'हार की जीत' नामक पाठ से एक प्रसंग पढ़कर सुनाएँगे।

"घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसन्द आ जाय उस पर वह अपना अधिकार समझता था।"

शिक्षण के मध्य

शिक्षक प्रसंग सुनाने के पश्चात बच्चों से कुछ प्रश्न करेंगे–

शिक्षक– इस प्रसंग में मुहावरों का प्रयोग कहाँ–कहाँ पर हुआ है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– 'साँप लोट गया' का क्या अर्थ होता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– 'वायु वेग से उड़ना' का क्या अर्थ होता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक प्रसंग में आए हुए मुहावरों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे तथा उनका अर्थ लिखते हुए वाक्य में प्रयोग करेंगे और बच्चों से चर्चा करेंगे।

1. साँप लोट गया
2. वायु वेग से उड़ना
3. आँखों का तारा
4. आँखें लाल होना

(अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग करें।)

शिक्षक मुहावरों के कुछ अन्य उदाहरण देते हुए उनकी अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।

शिक्षण के अत में

शिक्षक द्वारा बच्चों से कार्यपत्रक पर कार्य कराया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–33

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दिए गए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करते हैं तथा उनके अर्थ, समानार्थी शब्द एवं विलोम शब्दों को बताते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द–तालिका, विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक द्वारा शब्द–तालिका दिखाते हुए उसमें आए हुए शब्दों के प्रयोग एवं अर्थ को बताया जाएगा।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को कार्य–पुस्तिका से शब्द–तालिका दिखाते हुए उनसे पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, शब्दों के अर्थ तथा वाक्य–प्रयोग करने को कहेंगे। यह प्रक्रिया लगभग 40 मिनट की होगी।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक प्रयास करेंगे कि बच्चों ने जिस शब्द–रचना/वाक्य–प्रयोग का निर्माण किया है उसे समझ कर अन्य शब्दों एवं वाक्यों की रचना कर सकें।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कुछ शब्द देकर उसका अर्थ, समानार्थी शब्द, विलोम शब्द तथा वाक्य–प्रयोग घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–34

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे दिए गए शब्दों से कहानी का निर्माण करते हैं। (बातचीत करना, तर्कपूर्ण वाक्य सोचना, नये शब्दों का ज्ञान, रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास।)

सहायक सामग्री– शब्द–तालिका, विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक एक वाक्य कहकर कहानी का आरंभ इस प्रकार करेंगे कि उसी वाक्य को बढ़ाते हुए कक्षा के सभी बच्चे अपने–अपने वाक्य उसमें जोड़ते हुए सार्थक कहानी बना लें। शिक्षक बनाई गयी कहानी श्यामपट्ट पर लिखते जाएँगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को कार्यपुस्तिका में आए हुए शब्द तालिका के शब्दों को दिखाते हुए कार्यपुस्तिका पर कहानी–निर्माण के लिए कहेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक प्रयास करेंगे कि बच्चों ने जिस कहानी का निर्माण किया है उनका हाव–भाव से वाचन करें।

बच्चों द्वारा निर्मित कहानियों के वाचन के दौरान सार्थक और शिक्षाप्रद कहानी का चयन कर बच्चों को प्रोत्साहित करें।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को ऐसे ही शिक्षाप्रद कहानी का निर्माण करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 7

दिवस–35

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– दिए गए अनुच्छेद को पढ़ने के बाद बच्चे प्रश्नों का उत्तर विचारात्मक, वर्णनात्मक शैली में देते हैं

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक पाठ्यपुस्तक शब्द का विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षण के प्रारंभ में सामान्य बातचीत के पश्चात शिक्षक बच्चों से पुस्तक के विषय में पूछेंगे–

- आप की पाठ्यपुस्तक में कुल कितने पाठ हैं?
- शिक्षक बच्चों से पूछेंगे कि पाठ को कितने भागों में विभक्त किया गया है?
- पाठ को जिन भागों में विभक्त किया गया है उसे क्या कहते हैं?
- शिक्षक बच्चों से अनुच्छेद के बारे में बातचीत करेंगे।
- अनुच्छेद पढ़कर उत्तर कैसे दिया जाता है? बताइए।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक निम्नलिखित अनुच्छेद छात्रों के समक्ष चार्ट–पेपर/श्यामपट्ट पर लिखकर प्रस्तुत करेंगे तथा संबंधित प्रश्न करेंगे–

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहात में है। इनका संबंध देहात की जनता से है। बड़ी जान होती है इनमें। चैता कजरी बारहमासा सावन आज मिर्जापुर बनारस और उत्तर प्रदेश के पूर्वी और बिहार के पश्चिमी जिलों में गाए

जाते हैं। बाउल और भटियाली बंगाल के लोकगीत हैं। पंजाब में माहिया भी इसी प्रकार के हैं। हीर–राँझा, सोनी–महीवाल संबंधी गीत पंजाबी में और ढोला–मारू आदि के गीत राजस्थानी में बड़े चाव से गाए जाते हैं। इन देहाती गीतों के रचयिता कोरी कल्पना को इतना मान ना देकर अपने गीतों के विषय रोजमर्रा के जीवन से लेते हैं, जिससे वे सीधे मर्म का स्पर्श करते हैं। उनके राग भी साधारणतः पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन, सोरठ, आदि हैं। ये सभी लोकगीत गाँवों और इलाकों की बोलियों में गाए जाते हैं। लोकगीत की भाषा नित्य की बोली होने के कारण बड़ी आह्लादकर और आनन्ददायक होती है। राग तो इन गीतों के आकर्षक होते ही हैं, इनकी समझी जा सकने वाली भाषा भी इनकी सफलता का कारण है।

- चैता, बाउल, ढोला–मारू कहाँ के लोकगीत हैं?
- पीलू, सारंग, दुर्गा, सावन क्या हैं?
- आप अपने क्षेत्र में गाए जाने वाले लोकगीत का नाम बताइए?

शिक्षक बच्चों को विचारपूर्वक इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। इसके बाद शिक्षक की सहायता से बच्चे कार्यपत्रक संख्या एक पूर्ण करेंगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक संख्या दो पूर्ण करने के लिए देंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि बच्चा सीखने की राह में कहाँ पर है। शिक्षक बच्चों को अनुच्छेद के विषय में बताएँगे तथा उनकी शंकाओं को दूर करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या तीन को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 8

दिवस–36

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे वाक्यों को समझते हैं और वाक्यों को एक शब्द में लिखते है।

सहायक सामग्री– शब्द–कार्ड, फ्लैश–कार्ड (वाक्यांश) पुस्तक, विषय से संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण का प्रारंभ में

शिक्षक श्यामपट्ट पर अपने परिवेश से जुड़े और बोलचाल में बोले जाने वाले वाक्यांशों को लिखकर/फ्लैश कार्ड को दिखाते हुए बच्चों से लिखने के लिए कहेंगे।

- जो नाचता हो।
- जो बहुत पढ़ता हो।
- जो गाना गाता हो
- जो गाँव की सफाई करता है।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक श्यामपट्ट पर लिखे वाक्यांशों के लिए एक शब्द बच्चों से पूछेंगे और उनके बताए गए उत्तर को स्वयं शुद्ध रूप से उच्चारण करके बताएँगे–

नचनिया/नाचने वाला	नर्तक
पढ़ाकू/ पढ़वइया	पाठक
गवइया/गायक /गाने वाला	गायक

शिक्षक चार्ट/फ्लैश–कार्ड के माध्यम से वाक्यांश के लिए एक शब्द समझाएँगे।

गतिविधि–

शिक्षक बच्चों को दो समूहों में बाँटकर एक गतिविधि करवाएँगे। एक समूह वाक्यांश पढ़ेगा और दूसरा समूह उससे संबंधित एक शब्द वाला फ्लैश कार्ड दिखाएगा–

प्रथम समूह	द्वितीय समूह (एक शब्द)
» जो सत्य बोलता हो	सत्यवादी
» लिखने वाला	लेखक
» सेवा करने वाला	सेवक
» तैरने वाला	तैराक
» जिसमें दया हो	दयालु

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को दिऐ गए निर्देशों के अनुसार पूरा करने के लिए कहेंगे।

शिक्षक कुछ पुनरावृत्ति के प्रश्न करेंगे, जिससे वह यह जान सके कि बच्चे सीखने की प्रक्रिया में कितना सीख चुके हैं।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–37

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे एक शब्द के अनेक अर्थ से परिचित हैं और इनका दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– शब्दों के फ्लैश कार्ड, विविध कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ वाक्य लिखकर बच्चों के समक्ष पढ़ेंगे–

अलाव जल रहा था। सभी बैठे अंकों का खेल खेल रहे थे।
मोनू! जल पी लो, माँ ने आवाज लगाई।
मोनू– माँ! पहले हम अपने अंक बाँट लें, उसके बाद मैं जल पी लूँगा।
यह सुनकर माँ ने प्यार से उसे अंक में ले लिया।

शिक्षक इस प्रसंग से संबंधित कुछ प्रश्न बच्चों से करेंगे–

शिक्षक– इस लघु कथा में 'जल' शब्द कितनी बार आया है ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– इन दोनों स्थानों पर 'जल' शब्द का अर्थ बताओ।

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के मध्य

अब शिक्षक उन्हें बताएँगे कि पहले जल का अर्थ 'जलना' है तथा दूसरे जल का अर्थ 'पानी' है। इसी प्रकार शिक्षक अंक पर भी बच्चों से प्रश्न करेंगे तथा बच्चों

के उत्तर सुनने के बाद बताएँगे कि पहले अंक से तात्पर्य संख्या से है जब कि दूसरे अंक का प्रयोग गोद में लेने से है।

हिन्दी भाषा में बहुत से ऐसे शब्द होते हैं जो दो या दो से अधिक अर्थ देते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

अनेकार्थी शब्द– "ऐसे शब्द, जो दो या दो से अधिक अर्थ देने की योग्यता रखते हैं अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।"

अब शिक्षक दूसरे कार्यपत्रक को कक्षा में करवाएँगे और बच्चों से 'कर' के अन्य अर्थों– सरकार द्वारा लिया जाने वाला शुल्क, हाथी का सूँड़, आदि निकलवाने का प्रयास करेंगे। इसी प्रकार वह बच्चों से 'मन' का अर्थ वजन की इकाई, 'सोना' का अर्थ स्वर्ण तथा पत्र का अर्थ पत्ता आदि को ज्ञात करने का कार्य करवाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को चार या पाँच के समूह में बाँट देंगे तथा उनसे कार्यपत्रक पर कार्य करवाते हुए अनेकार्थी शब्दों पर उनकी समझ विकसित करेंगे।

इस प्रकार 'कनक' शब्द का अर्थ सोना एवं धतूरा, 'हार' शब्द का अर्थ गले का आभूषण और पराजय, 'पानी' शब्द का अर्थ जल तथा सम्मान सहज रूप से सभी को पता हो जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–38

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपठित गद्यांश को पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

सहायक सामग्री– कहानी की पुस्तक, कार्यपत्रक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

- शिक्षक बच्चों से विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के विषय में बातचीत करेंगे।
- कुछ पत्रिकाएं बच्चों को पढ़ने के लिए दी जाएँगी।
- इनसे कुछ प्रश्न पूछे जाएँगे तथा बच्चे उनका उत्तर देंगे।
- बच्चे इन पत्रिकाओं को पहले पढ़ चुके हैं जिसके चलते वे आसानी से उसका उत्तर दे सकते हैं।
- अपठित गद्यांश से आप क्या समझते हैं, अपने विचार व्यक्त कीजिए।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक बच्चों को एक अपठित गद्यांश देकर उससे संबंधित कुछ प्रश्न पूछेंगे–

प्रत्येक देश की अपनी एक विशिष्ट भाषा होती है, जो उस देश की पहचान बनती है। भारत देश में बहुत–सी भाषाएँ बोली जाती हैं, जिनमें हिन्दी एक प्रमुख भाषा है। हिन्दी ने हमें विश्व में एक अलग पहचान दिलाई है। हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है। 14 सितंबर सन् 1949 को भारत सरकार ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया।

शिक्षक– भारत देश की प्रमुख भाषा कौन–सी है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा में हिंदी कौन–से स्थान पर है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– हिंदी को राजभाषा के रूप में कब स्वीकार किया गया?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक अपठित गद्यांश के विषय में बच्चों को बताएँगे कि जो गद्यांश पहले न पढ़ा गया हो और जो आपकी पाठ्य पुस्तक से न लिया गया हो, उसे अपठित गद्यांश कहते हैं। अपठित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर छात्रों को अपनी बुद्धि और ज्ञान के आधार पर देने होते हैं। शिक्षक अपठित गद्यांशो की मुख्य बातों को बच्चों के समक्ष रखेंगे।

जैसे– सर्वप्रथम अपठित गद्यांश के मूलभाव को समझने के लिए उसे दो–तीन बार पढ़ना चाहिए। पूछे गये प्रश्नों को पढ़िए तथा गद्यांश में उनके संभावित उत्तरो को रेखांकित करते जाइए।

शीर्षक चयन करते समय गद्यांश के प्रथम तथा अंतिम वाक्य को विशेष सावधानी से पढ़ना चाहिए। शीर्षक से दिये गए गद्यांश का मूल भाव और उद्देश्य स्पष्ट हो जाना चाहिए।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों को अपठित गद्यांश के विषय में समझाएँगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–39

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे वाक्य–रचना में शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– शब्द–चार्ट, वाक्य–चार्ट आदि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक श्यामपट्ट पर एक छोटा–सा अनुच्छेद लिखेंगे–

मेरे खाते में ढेर सारे जानवर घुस आए। मने उनका मार भगाया। कुछ जानवर जंगल की ओर भाग, कुछ गाँव म भाग गए। अब खत में एक भ जनवर नहीं दखता।

शिक्षक बच्चों से इस अनुच्छेद को पढ़ने के लिए कहेंगे। कुछ बच्चे इसे शुद्धता से पढ़ने का प्रयास करेंगे और कुछ जैसे लिखा है वैसे ही पढ़ेंगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक पुनः उसी अनुच्छेद को शुद्ध रूप से लिखकर बच्चों से पढ़ने के लिए कहेंगे–

मेरे खेत में ढेर सारे जानवर घुस आए। मैंने उनको मार भगाया। कुछ जानवर जंगल की ओर भागे, कुछ गाँव में भाग गए। अब खेत में एक भी जानवर नहीं दिखता।

शिक्षक इसे शुद्ध रूप से लिखकर बताएँगे।

अब शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि भाषा के किसी शब्द को लिखने में प्रयुक्त वर्णों के सही क्रम को वर्तनी कहते हैं। वर्तनी को अंग्रेजी में स्पेलिंग कहते हैं। भाषा की समस्त ध्वनियों का सही उच्चारण करने के लिए वर्तनी की एकरूपता स्थापित की जाती है।

अब शिक्षक बच्चों को पुनः अनुच्छेद पढ़ने को कहेंगे तथा अशुद्ध अनुच्छेद को पढ़ने में आ रही समस्याओं को शुद्ध अनुच्छेद से तुलना करके पुनः बच्चों को समझाएँगे।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक द्वारा बच्चों से कार्यपत्रक पर कार्य करवाया जाएगा तथा जिन बच्चों को समझने में समस्या आ रही हो उनका सहयोग वर्तनी समझने में करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 8

दिवस–40

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विराम–चिह्न की पहचान करते हैं, तथा इसका लेखन में प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– विराम–चिह्नों से युक्त फ्लैश कार्ड, विविध विराम–चिह्नों से युक्त अनुच्छेद का चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक शिक्षण की शुरुआत कुछ वाक्य बोलते हुए करेंगे।

शिक्षक– अरे! तुम आ गये? (आश्चर्य)

बच्चे– हाँ सर।

शिक्षक– खाना खाये हो?

बच्चे– हाँ।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक पूछे गए प्रश्न एवं उत्तर को विराम–चिह्न लगाते हुए बच्चों को समझाते जाएँगे–

अरे!, भो!, हे! के बाद लगने वाला चिह्न (!) आश्चर्य, विस्मय, एवं पुकारने का बोध कराता है।

"मैं समझ गया बाबू जी!"

> बोलते, लिखते या पढ़ते समय वाक्यों में कब कहाँ तथा किस प्रकार रुकना है या ध्वनि–परिर्वतन करना है, इसका बोध कराने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

क्रम सं0	विराम–चिह्न का नाम	प्रतीक	वाक्य
1	पूर्ण विराम	(।)	एक दिन एक सज्जन से गलती हो गई।
2	अल्प विराम	(,)	राम, मोहन और श्याम घर चले गए।
3	दुहरा उद्धरण चिह्न	(" ")	"देखिए महाशय, यह आपकी सरासर गलती है ।"
4	प्रश्नवाचक चिह्न	(?)	आज आप क्या पढ़ेंगे ?
5	योजक चिह्न	(–)	माता–पिता दोनों गए हैं ।

गतिविधि

शिक्षक विराम–चिह्नों को समझाते हुए कुछ वाक्य उदाहरण के लिए लिखकर बच्चों को उचित विराम–चिह्न लगाने का निर्देश देंगे ।

- वह विद्यालय जा रहा था ।
- मोहन–सोहन और गीता बाजार जा रहे थे।
- बाल गंगाधर तिलक ने कहा था।
- स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

- आप क्या कर रहे थे?
- दिन–रात चैन नहीं लेता।

शिक्षण के अंत में

शिक्षण के अंत में शिक्षक विराम–चिह्न को स्पष्ट करेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–41

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे किसी वस्तु जैसे– मोबाइल के लाभ, हानि, उपयोगिता के आधार पर चिंतन–मनन करके अभिव्यक्ति देते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र–कार्ड, मोबाइल, स्मार्ट घड़ी।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कुछ प्रश्न करेंगे–

शिक्षक– कुछ इलेक्ट्रानिक गैजेट्स (उपकरण) के नाम बताइए?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– संचार साधनों में सबसे ज्यादा किस उपकरण का प्रयोग हो रहा है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– मोबाइल फोन के क्या–क्या लाभ एवं हानियाँ हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक मोबाइल फोन के प्रयोग से संबंधित एक पोस्टर दिखाएँगे–

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कक्षा में बच्चों को दो समूहों में बाँटेंगे। समूह एक मोबाइल फोन से होने वाली हानियों के बारे में लिखेंगे और समूह दो मोबाइल फोन से होने वाले लाभ के बारे में लिखेंगे। दानों समूह के विचारों को जोड़ते हुए शिक्षक द्वारा समेकित विचार प्रस्तुत किया जाएगा।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से छोटे समूह में कुछ प्रश्न रखेंगे, जैसे–

शिक्षक– मोबाइल (स्मार्ट) फोन के किन–किन ऐप्स के बारे में आप जानते हो?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– ह्वाट्स ऐप एवं यूट्यूब से आप क्या–क्या करते हो?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– गूगल, क्रोम, ईमेल के बारे में आप क्या जानते हो?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– ऑनलाइन वस्तुएँ आप कैसे खरीदते हो?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक बच्चों के संभावित उत्तर को लेते हुए मोबाइल फोन के लाभ एवं हानि पर पोस्टर की सहायता से परिचर्चा करेंगे। (श्यामपट्ट कार्य या पोस्टर प्रदर्शन)

शिक्षक बच्चों से स्मार्ट फोन के लाभ एवं हानि पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

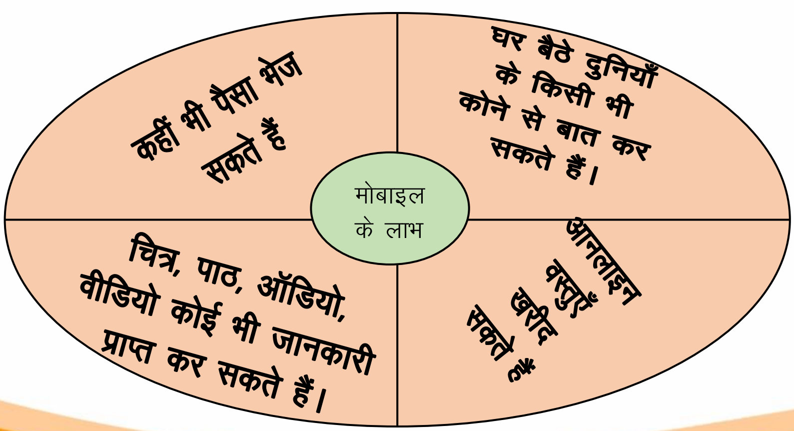

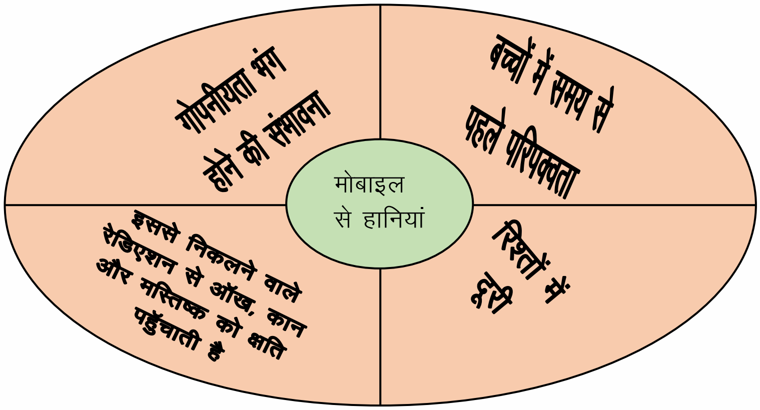

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से निम्नलिखित बिंदुओं पर एक प्रारूप बनाकर लाने के लिए कहेंगे–

- तुम्हारे घर में कितने लोगों के पास स्मार्ट फोन है? वे अपने फोन का प्रयोग किन–किन कार्यों के लिए एवं कितने समय के लिए करते हैं?
- घर के किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लें और उनकी बातों को कॉपी पर नोट करें–

साक्षात्कार के बिंदु–

- आपके पास स्मार्ट फोन नहीं था तब आपका जीवन कैसा था?
- अब आपके पास स्मार्ट फोन है तब आपके जीवन में क्या–क्या बदलाव आए?

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–42

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे किसी पाठ्यपुस्तक, समाचार–पत्र/पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को पढ़कर क्रियात्मक लेखन करते हैं। हस्तलिखित बाल– पत्रिका तैयार करते हैं।

सहायक सामग्री– कार्यपत्रक, विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार–पत्र इत्यादि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करके शैक्षिक वातावरण को सरल बनाएँगे।

- शिक्षक बच्चों को पुस्तक पढ़ने में रुचि से संबंधित प्रश्न करेंगे।
- किस प्रकार की पुस्तकें पढ़ना पसंद करते हैं। शिक्षक बच्चों से प्रश्न करेंगे कि आप बाल–पत्रिकाएँ पाठ्य–पुस्तक की अपेक्षा क्यों अधिक पसंद करते हैं?
- बाल–पत्रिका का निर्माण किस प्रकार से किया जाता हैं?

शिक्षण के मध्य

कक्षा–शिक्षण में शिक्षक पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ, जैसे– समाचार–पत्र, पत्रिका का उदाहरण देकर बच्चों को उनकी उपयोगिता के संबंध में बताएँगे।

शिक्षक बच्चों को बताएँगे कि "वे पत्रिकाएँ जिनमें बच्चों के अनुकूल साहित्य प्रकाशित होता है, बाल–पत्रिकाएँ कही जाती हैं। मनोरंजन, शिक्षा और बच्चों की भावना इन तीन बिंदुओं के इर्द–गिर्द ही बाल–पत्रिकाएँ लिखी जाती हैं।"

शिक्षण के अंत में

बाल पत्रिका से संबंधित कुछ प्रश्न शिक्षक द्वारा पूछे जाएँगे।

शिक्षक– बाल–पत्रिका से आपका क्या आशय है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– बाल–पत्रिका निर्माण के प्रमुख बिन्दु क्या हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–43

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे बोलचाल में अनुस्वार और अनुनासिक वाले शब्दों एवं वाक्यों का उच्चारण करते एवं समझते हैं।

सहायक सामग्री– अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों से संबधित फ्लैश–कार्ड, चार्ट, विषय संबंधित सामग्री।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारम्भ में:–

शिक्षक अनुस्वार एवं अनुनासिक से संबंधित विविध शब्द जैसे– आँख, गाँव, माँ, हंस, रंग, संग, काँव–काँव, कंठ, बंद आदि शब्दों को श्यायमपट्ट पर लिखकर एक–एक बच्चे को बुलाकर प्रत्येक शब्द का स्पष्ट उच्चारण करेंगे एवं करवाएँगे।

शिक्षण के मध्य में:–

शिक्षक श्यामपट्ट पर अनुस्वार एवं अनुनासिक वाले शब्दों से युक्त एक अनुच्छेद बच्चों के सामने प्रस्तुत करेंगे, जिसमें आए अनुस्वार एवं अनुनासिक से संबंधित शब्दों को बच्चों से अपनी कॉपी में लिखने के लिए कहेंगे–

लोकगीतों के कई प्रकार हैं। इनका एक प्रकार तो बड़ा ही ओजस्वी और सजीव है। यह इस देश के आदिवासियों का संगीत है। मध्य प्रदेश, छोटा नागपुर में गोंड–खांड, ओराव, मुंडा, भील, सन्थाल आदि फैले हुए हैं, जिसमें आज भी जीवन, नियमों की जकड़ में बँध न सका और वह निर्द्वन्द्व लहराता है। इनके गीत और नृत्य अधिकतर साथ साथ और बड़े –बड़े दलों में गाये और नाचे जाते हैं। आदमियों और औरतों के दल एक साथ या एक दूसरे के जवाब में गाते हैं और दिशाएँ गूँज उठती हैं।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक अनुस्वार और अनुनासिक को और अधिक स्पष्ट करने के लिये अनुस्वार एवं अनुनासिक से संबंधित फ्लैश कार्ड को बच्चों से साझा कर अनुस्वार व अनुनासिक शब्दों को अलग–अलग करने के लिए कहेंगे।

प्रदत्त कार्य–

शिक्षक बच्चों से निम्नलिखित पहेलियों को अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों के प्रयोग से घर से पूरा करके लाने को कहेंगे–

1– सर–सर कर मैं डोर के संग हवा में उड़ती हूँ। ....

2– प्यार से रात में लोरी जो है सुनाती, वो कहलाती है। ....

3– आसमान में दिखता हूँ , मामा मैं कहलाता हूँ। ....

4– कान्हा का मैं वाद्‌ययंत्र हूँ। ....

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–44

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे वाक्यों के भेद और उनके अंतर को समझते हैं।

सहायक सामग्री– चार्ट–पेपर, फ्लैश–कार्ड इत्यादि।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक कुछ असंगत क्रम में लिखे शब्दों से बने वाक्यों को श्यामपट्ट पर लिखेंगे, जैसे–

है रहा राहुल बना चित्र।

रीना है रही उसे देख।

शिक्षक बच्चों को इन वाक्यों को व्यवस्थित क्रम में लगाने का निर्देश देंगे और वाक्य की परिभाषा इस प्रकार स्पष्ट करेंगे–

सार्थक शब्दों का वह समूह जो एक निश्चित अर्थ दे, वाक्य कहा जाता है।

शिक्षण के मध्य

वाक्य की अवधारणा को स्पष्ट करने के बाद शिक्षक श्यामपट्ट पर अलग–अलग तरह के कुछ वाक्य लिखेंगे और वाक्य की संरचना के आधार पर वाक्य के भेद स्पष्ट करेंगे।

वाक्य– ताजमहल आगरा में स्थित है।

संवाद– जिन वाक्यों में एक या एक से अधिक उद्देश्य हों परन्तु क्रिया एक हो, सरल वाक्य कहे जाते हैं। शिक्षक इस अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।

वाक्य– घंटी बजी और बच्चे कक्षा की ओर जाने लगे।

संवाद– जिस वाक्य में दो या दो से अधिक वाक्य समुच्चय बोधक शब्द से जुड़े होते है वे संयुक्त वाक्य के अंतर्गत आते हैं शिक्षक इस अवधारणा को स्पष्ट करें।

वाक्य– मोर नाचने लगे क्योंकि आकाश में बादल छा गये थे।

मेरा घर वहीं है, जहाँ डाकखाना है।

संवाद– जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य हो और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य हों, तो उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। शिक्षक इस अवधारणा को स्पष्ट करेंगे।

शिक्षण के अंत में

कुछ अन्य उदाहरण देकर शिक्षक वाक्य के प्रकार को स्पष्ट करेंगे।

शिक्षक द्वारा बच्चों से कार्यपत्रक पर कार्य कराया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 9

दिवस–45

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे 'र' के विभिन्न प्रयोग से संबंधित अंतर को समझते हैं।

सहायक सामग्री– 'र' के विविध प्रयोग के फ्लैश–कार्ड, चार्ट पर लिखे शब्द।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक निम्नलिखित कविता का आदर्श पाठ करेंगे–

रात में काले बादल छाये,
मेढक टर्र–टर्र टर्राए।
ट्रेन ने की है छुक–छुक भाई,
कुछ क्षण में होगा प्रभात,
रात की हो गयी बीती बात।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक कविता को चार्ट पर अथवा श्यामपट्ट पर लिखेंगे तथा 'र' के प्रयोग वाले शब्दों को रेखांकित करेंगे और बच्चों को बताएँगे।

'र' के विभिन्न रूप को शिक्षक फ्लैश कार्ड में दिखाएँगे।

र	ʿ	ˏ	^
रजनी	गर्व	श्रम	ट्रक

शिक्षक, श्यामपट्ट पर यह स्पष्ट करेंगे कि व्यंजन 'र' का विविध रूपों में प्रयोग किया जाता है, जिन्हें हम इस प्रकार देख सकते है, जैसे–

रचना, राधिका, रसोई, क्रम, कर्म ये 'र' के विविध रूप हैं।

चरण 1–

जहाँ पर 'र' वर्ण का प्रयोग स्वर रहित अर्थात् 'र्' के रूप में होता है उसे रेफ कहा जाता है जिसे सांकेतिक रूप में र्‍ लिखते हैं।

जैसेः– कर्म, गर्व, वर्षा, निर्भय, समर्पण आदि। इन शब्दों का उच्चारण करते समय र्‍ वर्ण अर्थात स्वर रहित र को रेफ के रूप में उच्चारित करते हैं। अर्थात् जल्दी से (र) का उच्चारण करते हैं।

इन शब्दों का उच्चारण करते समय पहले इन्हें इस प्रकार विच्छेद कर लें–

कर्म – क् + अ + र् + म् + अ
गर्व– ग् + अ + र् + व् + अ
वर्ष– व् + अ + र् + ष् + अ

यहाँ यह भी स्पष्ट करेंगे कि रेफ अगले वर्ण के ऊपर लगाया जाता है जब कि उच्चारण करते समय रेफ का उच्चारण अगले वर्ण से पहले करेंगे। जैसे कर्म में क के बाद र् वर्ण बोलेंगे उसके बाद 'म' का उच्चारण करेंगे।

चरण 2–

पदेन र (्र) का स्वर सहित प्रयोग किया जाता है, लेकिन जिस व्यंजन वर्ण में इसे जोड़ा जाता है वह अपूर्ण अर्थात् स्वर रहित होता है। जैसेः– क्रम, प्रवाह, दरिद्र

क्रम– क् + र् + म् + अ

प्रवाह– प् + र् + अ + व् + आ + ह् + अ

दरिद्र – द् + अ + र् + इ + द् + र् + अ

उपर्युक्त उदाहरण वाले शब्दों का उच्चारण करते हुए शिक्षक यह स्पष्ट करें कि पदेन 'र' अपने पूर्व वाले आधे व्यंजन वर्ण (स्वर रहित वर्ण) के साथ पदेन रूप में प्रयोग होता है। उच्चारण करते समय पूर्व वाले आधे वर्ण को जल्दी से उच्चारण किया जाता है और 'र' अपने पूर्व रूप में उच्चारण होता है।

(इसे बार–बार उच्चारण कराएँ, स्वर रहित व्यंजन वर्ण की ध्वनि पहले और पूर्ण की ध्वनि बाद में उच्चारण होगा।)

चरण 3–

'र' (‸) का यह रूप भी पदेन होता है इसमें भी 'र' स्वर सहित होता है। इसका प्रयोग पाई रहित अर्थात् गोल वर्ण (ट, ड, ढ) व्यंजनों में होता है। यहाँ भी र अपने पूर्ण रूप में उच्चारण होता है। जिस व्यंजन में इसे जोड़ा जाता है। वह अपूर्ण होता है, जैसे– ट्रक, राष्ट्र, पेट्रोल।

ट्रक– ट् + र् + अ + क् + अ

राष्ट्र–र् + आ + ष् + ट् + र् + अ

पेट्रोल– प् + ए + ट् + र् + ओ + ल् + अ

शिक्षक वर्ण–विच्छेद कर शब्दों के उच्चारण का अभ्यास कराएँ।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक रेफ एवं पदेन र वर्ण वाले शब्दों का मिला–जुला संग्रह प्रस्तुत कर अभ्यास कराएँगे। शिक्षक उपर्युक्त शब्दों का वर्ण–विच्छेद के साथ उच्चारण अभ्यास कराएँगे। शिक्षण के अंत में दिए गए कार्यपत्रक का अवलोकन करने के बाद शिक्षक बच्चों की कठिनाइयों का निवारण करेंगे तथा उनके उत्तर भी सुनेंगे।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–46

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे विभिन्न कवियों एवं लेखकों की रचना–विधा के बारे में बताते हैं।

सहायक सामग्री– पाठ्य–पुस्तक, विभिन्न कवियों/लेखकों के पोस्टर।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न करेंगे–

वे रहीम नर धन्य हैं पर उपकारी अंग।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ किनके द्वारा लिखी गयी हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– मुंशी प्रेमचन्द की किसी एक कहानी का नाम बताइए ?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षक– (जयशंकर प्रसाद का चित्र दिखाते हुए) यह किसका चित्र है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)

शिक्षण के मध्य

शिक्षक पाठ्यपुस्तक अक्षरा–6 की विषय सूची को ध्यान से देखने के लिए बच्चों से कहेंगे तथा पुस्तक में आए सभी पाठों को उनकी विधाओं के आधार पर कार्यपत्रक संख्या एक में दिए गए निर्देश के अनुसार अलग–अलग करने को कहेंगे।

इसके बाद शिक्षक कक्षा के बच्चों को छोटे समूह में बाँटकर कहेंगे कि पुस्तक में पाठ के अंत में दिए गए लेखकों एवं कवियों के परिचय वाले अंश से

उनकी कम से कम पाँच रचनाओं को छाँटकर कार्यपत्रक संख्या दो में दिए गए निर्देश के अनुसार लेखकों एवं कवियों के चित्रों को पहचानते हुए सूची तैयार करें।

गतिविधि 1–

शिक्षक बच्चों को छोटे–छोटे समूह में बाँटकर निम्न प्रकार से गतिविधि करवाएँगे– समूह–1 किसी एक कवि/लेखक का नाम बोलेगा तथा समूह–2 उस कवि/लेखक की किसी एक रचना का नाम बताएगा तथा उसकी विधा भी बताएगा।

गतिविधि 2–

शिक्षक कक्षा में कवियों/लेखकों के चित्र दिखाकर उनके नाम पूछेंगे तथा यह भी पूछेंगे कि आपको किस कवि/लेखक की रचना सबसे ज्यादा पसंद है और क्यों? अपनी कॉपी पर उसे लिखें।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक प्रश्नोत्तर के माध्यम से उनकी जानकारी को मजबूत बनाएँगे, जैसे–

- सूरदास एवं तुलसीदास ने किस तरह के पदों की रचना की है?
- 'जागो जीवन के प्रभात', 'मनभावन सावन' किस विधा में लिखी गई है?
- रामधारी सिंह दिनकर किस प्रकार के कवि कहे जाते हैं?
- आपकी पाठ्यपुस्तक में कौन–कौन–से पाठ प्रकृति से संबंधित हैं और उनमें प्रकृति के किस रूप का वर्णन किया गया है?
- 'एक संसद नदी की' किसकी रचना है और किस विधा में लिखी गई है?

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक संख्या तीन को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

सप्ताह– 10

दिवस–47

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे अपने स्तर के अनुकूल कविता–लेखन करते हैं।

सहायक सामग्री– कविता से संबंधित चित्र, पोस्टर, वीडियो–क्लिप।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों को चार्ट पर लिखी कविता पढ़कर सुनाएँगे जिसे सभी बच्चे ध्यानपूर्वक सुनेंगे तथा पढ़कर उसका अर्थ बताएँगे।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक द्वारा कविता का पूरे हाव–भाव के साथ आदर्श पाठ कर उसका भावार्थ बताया जाएगा। शिक्षक द्वारा कविता का सस्वर पाठ एवं भावार्थ बताने के बाद बच्चों को मौन पाठ करने का निर्देश दिया जाएगा–

यह हार एक विराम है
जीवन महासंग्राम है,
तिल–तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं,
वरदान मागूँगा नहीं।
स्मृति–सुखद प्रहरों के लिए
अपने खण्डहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की सम्पत्ति चाहूँगा नहीं,
वरदान माँगूँगा नहीं।

शिक्षक– कविता में जीवन को महासंग्राम क्यों कहा गया है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक–कवि तिल–तिल मिट जाने के बाद भी किस बात के लिए तैयार नहीं है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक–कवि दया की भीख नहीं लेना चाहता, इस संबंध में आपका क्या विचार है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक कवि के आत्मविश्वास व स्वाभिमान पर चर्चा करेंगे और बच्चों को यह भी संदेश देने का प्रयास करेंगे कि किसी भी परिस्थिति में आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं करना चाहिए।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों से कार्यपत्रक को उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से करके लाने को कहेंगे।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–48

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– बच्चे कहानी कविता को पढ़कर उसका भाव बताते हैं और शब्दों से कविता, कहानी एवं अनुच्छेद का निर्माण करते हैं।

सहायक सामग्री– चित्र एवं शब्द फ्लैशकार्ड, कुछ कविता/कहानी लिखे हुए चार्ट।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक सामान्य बातचीत से शिक्षण की शुरुआत करेंगे और बच्चों से कविता कहानी के बारे में पूछेंगे कि–

शिक्षक– बच्चों आप अपने घर में किससे किस्सा/कहानी सुनते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– आपको किस तरह की कहानी अच्छी लगती है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– क्या आपको पता है कि कहानी या कविता कैसे लिखी जाती है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के मध्य

शिक्षक निम्न गतिविधि करवाएँगे–

ऊपर रखा दूध मलाई,
नीचे बिल से चुहिया आई।
किसे छोड़ दूँ किसको खाऊँ,
बिल्ली कहती म्याऊँ–म्याऊँ।।

शिक्षक कविता को बच्चों के सामने स्वरों के उचित उतार–चढ़ाव के साथ सुनाएँगे। उसके बाद इसी कविता को अव्यवस्थित क्रम में बच्चों के सामने रखेंगे तथा उनसे कविता को सही क्रम में लगाकर पूरी करने के लिए कहेंगे–

नीचे बिल से चुहिया आई,
ऊपर रखा दूध मलाई।
बिल्ली करती म्याऊँ–म्याऊँ,
किसे छोड़ दूँ किसको खाऊँ।।

शिक्षक बच्चों की गतिविधि का निरीक्षण करते हुए उनकी कठिनाइयों का निवारण करेंगे।

गतिविधि–

शिक्षक बच्चों को कुछ शब्द देंगे और उनसे छोटी कहानी या कविता लिखने को कहेंगे।

पक्षी, आकाश, परी, छड़ी, गुड़िया, झूला, घोड़ा, आसमान

शिक्षण के अंत में

शिक्षक द्वारा बच्चों से कार्यपत्रक पर कार्य करवाया जाएगा। कार्य का अवलोकन शिक्षक द्वारा किया जाएगा।

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिऐ गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के तीन कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–49

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– सुनी हुई सामग्री का अपने व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं।

सहायक सामग्री– पोस्टर, कुछ अन्य कहानियों की किताबें, इत्यादि ।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

सर्वप्रथम शिक्षक बच्चों से उनके दैनिक जीवन के विषय में बात करें और यह पता लगाने का प्रयास करें कि कौन–कौन बच्चे कई दिनों से विद्यालय नहीं आ रहे हैं, उनके नहीं आने का कारण पता करें, साथ ही आस–पास फैली हुई गन्दगी की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास करेंगे।

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से फैली हुई गंदगी तथा पनप रहे जीवाणु एवं विषाणुओं पर चर्चा करेंगे। इसके बाद उन्हें एक कहानी सुनाएँगे–

चाँदपुर गाँव मे बीमारियों का कहर बढ़ता जा रहा था। हर्ष के स्कूल में उसके शिक्षक ने बताया था कि अधिकतर बीमारियाँ मच्छर तथा मक्खियों से फैलती हैं। छुट्टी के बाद जब हर्ष स्कूल से घर आ रहा था तब उसने देखा, सड़क के किनारे बड़े–बड़े कूड़ेदान रखे हुए थे। कूड़ेदान ढके हुए नहीं थे, कचरा भी इधर–उधर फैला हुआ था ।

उनके ऊपर ढेर सारी मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। हर्ष एक समझदार बच्चा था। वह तुरन्त समझ गया कि यही मक्खियाँ हमारे घरों में जाकर खाने–पीने की वस्तुओं पर बैठ रही हैं। ऐसे भोजन को खाकर अधिकतर लोग बीमार पड़ रहे हैं।

उसने घर जाकर सारी बात अपनी माँ को बताया। हर्ष और उसकी माँ ने घर मे रखे हुए खाने पीने की वस्तुओं को ढक कर रख दिया, जिससे मक्खियाँ उन पर न बैठ सकें।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों से कुछ बीमारियों की चर्चा करेंगे, जैसे– मलेरिया, डेंगू, हैजा इत्यादि। इनके फैलने के कारण बताएँगें। बच्चों को प्रेरित करें कि बीमारियों से बचने के लिए आस–पास सफाई रखें तथा अपने घर की खाद्य सामग्रियों को सुरक्षित स्थान पर ढक कर रखें। बच्चों को इसके अलावा यह भी बताएँगे कि कुछ बीमारियाँ मक्खियों, मच्छरों के अलावा बिना हाथ धोए भोजन करने से भी फैलती हैं। स्वयं की सफाई भी आवश्यक है।

प्रदत्त कार्य– मक्खियों एवं मच्छरों से फैलने वाली दो बीमारियों के नाम एवं बचाव के उपाय लिखकर लाने के लिए कहें।

(**नोट–** बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

सप्ताह– 10

दिवस–50

शिक्षण–योजना

अधिगम संप्राप्ति– अनुच्छेद को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर देते हैं तथा अपने विचार लिखते हैं।

सहायक सामग्री– कहानियों की पुस्तकें, कक्षा–7 की पाठ्यपुस्तक।

शिक्षण–प्रक्रिया

शिक्षण के प्रारंभ में

शिक्षक बच्चों से सामान्य बातचीत करेंगे तथा उनके परिवार के सदस्यों से संबंधित कुछ बातें पूछेंगे, जैसे–

शिक्षक– आपके परिवार में कितने सदस्य हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक–आपके परिवार में ऐसा कौन–सा सदस्य है जिससे आप अपनी सभी समस्याओं के बारे में बातचीत करते हैं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– घर में आपके लिए भोजन कौन बनाता है?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

बच्चों की बातों को सुनने के पश्चात् शिक्षक एक अनुच्छेद बच्चों को सुनाएँगे। (प्रस्तुत अनुच्छेद अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जी की माँ के प्रति समर्पित है।)

शिक्षण के मध्य

मेरे जन्म के 5 या 7 वर्ष बाद आपने हिन्दी पढ़ना आरंभ किया। पढ़ने का शौक आपमें खुद ही पैदा हुआ था। मोहल्ले की संग सहेली जो घर पर आ जाती थी, उन्हीं में जो कोई शिक्षित थीं, माताजी उनसे अक्षर बोध करतीं। इसी प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता उसमें पढ़ना–

लिखना करतीं। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वे देवनागरी पुस्तकों का अवलोकन करने लगीं। मेरी बहिनों को छोटी आयु में माताजी ही शिक्षा दिया करती थीं। जब से मैंने आर्य समाज में प्रवेश किया, तबसे माताजी से खूब वार्तालाप होता। यदि मुझे माता ना मिलती, तो मैं भी अति साधारण मनुष्य की भाँति संसार चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता।

शिक्षक इस अनुच्छेद से संबंधित कुछ प्रश्न बच्चों से पूछेंगे, जैसे–

शिक्षक– माताजी को कौन सा विषय पढ़ना अच्छा लगता था?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षक– अपने खाली समय का प्रयोग माँ किन कार्यों में करती थीं?

बच्चे– ...(संभावित उत्तर)।

शिक्षण के अंत में

शिक्षक बच्चों द्वारा किए गए कार्यों की जाँच करेंगे। बच्चों को लेखन–कार्य में यदि कोई समस्या आ रही हो तो उसका समाधान करेंगे। अनुच्छेद से संबंधित मुख्य–मुख्य बातों का पुनः दुहराव शिक्षक द्वारा किया जाएगा।

कुछ अनुप्रयोगात्मक प्रश्न बच्चों के परिवेश से संबंधित भी कर सकते हैं, जैसे–

यदि गृह कार्य में कोई समस्या आती है तब आप किस से सहयोग लेते हैं?

आप घर के किन किन कार्यों में अपनी माताजी और पिताजी का सहयोग करते हैं?

प्रदत्त कार्य– शिक्षक बच्चों को कार्यपत्रक में दिए गए निर्देशों के अनुसार घर से लिखकर लाने के लिए कहेंगे।

(**नोट**– बच्चों के उपयोग के लिए कार्यपुस्तिका में संबंधित दिवस की शिक्षण योजना के दो कार्यपत्रक दिए गए हैं। कम से कम एक कार्यपत्रक का प्रयोग प्रदत्त कार्य के लिए किया जाए।)

राज्य हिन्दी संस्थान . उ.प्र. वाराणसी
प्रतिष्ठित जाग्रत

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(स्थापना वर्ष-1975)

निकट पुलिस लाइन, वाराणसी (पिनकोड-221001)

ई-मेल : rajyahindisansthan1975@gmail.com

वेबसाइट : rajyahindisansthanupvns.org.in